



केनरा ज्योति

अंक : 28

अप्रैल - जून 2021



साइबर सुरक्षा

बैंकिंग व स्वास्थ्य सेवा



वित्तीय प्रबंधन

आत्मनिर्भर भारत अभियान

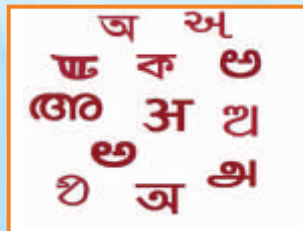
ग्रामीण क्षेत्र में बैंक वित्तीयन



डिजिटल बैंकिंग



संप्रेरण कौशल



नारी शक्ति

केनरा बैंक

भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank

A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can



दिनांक 03.06.2021 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 180वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 27वें अंक का विमोचन करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर । साथ में श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक व अन्य कार्यपालक उपस्थित हैं ।



दिनांक 03.06.2021 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 180वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), बेंगलूरु की 'राजभाषा शील्ड योजना' के तहत राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए केनरा बैंक को हासिल 'प्रथम पुरस्कार' हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर के हाथों से ग्रहण करते हुए श्री एल.वी.आर. प्रसाद, मुख्य महा प्रबंधक, मा सं विभाग व श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मा सं विभाग ।



श्री एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक
एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी



श्री एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक



श्री शंकर एस.
महा प्रबंधक



श्री एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

संपादन सहयोग

श्री एन.एस. ओमप्रकाश
श्री ओमप्रकाश साह
श्री बिबिन वर्गीस
श्री अजय कुमार मिश्र
श्री रवि प्रकाश सुमन
श्री डी. बालकृष्णा

श्रीमती शिवानी तिवारी
श्रीमती कीर्ति पी.सी.
श्रीमती खुशबू कुमारी गुप्ता
श्री संजय गौतम
श्रीमती आर.वी. रेखा

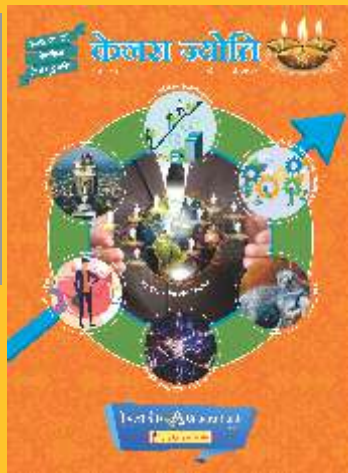
बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बैंगलूर - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

* * *

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों
के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे
सहमत होना ज़रूरी नहीं है।



पृष्ठ संख्या	विषय सूची
2	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश
3	मुख्य महा प्रबंधक का संदेश
4	मुख्य संपादक का संदेश
5	साइबर सुरक्षा के उपाय एवं जागरूकता
8	बैंकिंग सेवाओं में स्थानीय भाषाओं का महत्व
11	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विकास में योगदान
16	आत्मनिर्भर भारत : अवसर, चुनौतियाँ एवं सफलता
18	किस्सा कहानी का
21	देवनागरी लिपि की विशेषता
23	'नए सामान्य' से 'नए भविष्य' तक
26	डिजिटल साक्षरता से जूझता बैंकिंग उद्योग
28	एक मामूली सा सिपाही हूँ बेशक कोई भगवान नहीं
29	मटके वाला घर
32	प्रभावी संप्रेषण और वाचन कौशल
36	कुछ बातें
37	केनरा बैंक अखिल भारतीय अंतरा-बैंक ऑनलाइन राजभाषा संगोष्ठी - 2021
38	नारी शक्ति
39	अग्रणी बैंक योजना-ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीयन और सतत विकास का रोडमैप
43	ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता : श्रृंखला
45	वित्तीय प्रबंधन
47	कुछ कमी सी है!
48	हिंदी ई-टूल का प्रयोग

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रि य केनराइट्स, 'केनरा ज्योति' के 28वें संस्करण के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है। जैसा कि आपको विदित है, 'केनरा ज्योति' हमारे बैंक के कर्मचारियों के लिए हिंदी में अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम है, जिसके माध्यम से हमारे कर्मचारी बैंकिंग जगत की आधारभूमि को सुदृढ़ करते हुए समसामयिक विषयों पर चिंतनपरक लेख प्रस्तुत कर बैंकिंग के विभिन्न आयामों से पाठकों को अवगत कराते हैं, साथ ही सामाजिक विषयों पर लेख, यात्रा वृत्तांत, कविताएं इत्यादि प्रस्तुत करके अपने साहित्यिक कौशल को निरखारते हुए अपना व्यक्तित्व विकास भी करते हैं।

बैंकिंग जगत की बात करें तो कोरोना महामारी की दूसरी लहर के चलते बैंकिंग सेवा में भी अभूतपूर्व चुनौतियां आईं। मैं अपने प्रतिबद्ध और समर्पित कर्मचारियों की सराहना करता हूँ जिनके अथक प्रयासों के चलते हम इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान भी अपने ग्राहकों को अनवरत सेवाएं दे पाने में सक्षम हो सके हैं और लक्षित कारोबार प्राप्त करने में सफलता हासिल की है।

पिछले तीन महीनों में महामारी के चलते देश के अनेक परिवारों के साथ-साथ हमारे कर्मचारियों ने भी इस महामारी से लड़ते हुए अपने प्रियजनों को खोया है, ऐसे सभी निर्भीक केनरा बैंक परिवार के सदस्यों के प्रति मैं अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। ईश्वर आप सभी को इस कठिन समय का सामना करने की शक्ति प्रदान करे, ऐसी कामना करता हूँ। महामारी की इस दूसरी लहर से निपटने के लिए वैक्सिन के रूप में एक कारगर हथियार अब प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और मैं सभी केनराइट्स और उनके परिवार के सदस्यों से वैक्सिन लेने का अनुरोध करता हूँ, ताकि इस वायरस के प्रसार को रोका जा सके और इसके दुष्प्रभावों को कम किया जा सके।

कर्मचारी कल्याण के लिहाज से केनरा बैंक सर्वश्रेष्ठ बैंक हो, इसके लिए बैंक द्वारा पिछले 15 महीनों में कर्मचारी हितों को ध्यान में रखते हुए ग्रुप टर्म लाइफ इंश्योरेंस, 14 दिनों का विशेष अवकाश, प्रदर्शन सहबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई), टीकाकरण शिविर, टीकाकरण लागत प्रतिपूर्ति, वर्क फ्रम होम एवं कोविड हेल्पलाइन जैसे अनेक कदम उठाए गए हैं।

इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान भी बैंक के सभी मापदंडों पर सराहनीय प्रदर्शन को हमारे शेयरधारकों ने भी सराहा है, जिसके चलते केनरा बैंक शेयर का मूल्य पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष जून माह में लगभग दुगुने मूल्य पर पहुंच गया। हमें अपने इस प्रदर्शन को बरकरार रखना है, जिससे हम सितम्बर 2021 तिमाही के निर्धारित लक्ष्यों को भी प्राप्त कर सकें। इस दिशा में हमें अपने कासा जमा बढ़ाने, एनपीए स्तर घटाने और बेहतर ग्राहक सेवा के ज़रिए शिकायतों की संख्या को कम करने पर विशेष ध्यान देते हुए आगे बढ़ना है।



ग्राहक किसी भी व्यवसाय के प्रमुख घटक होते हैं और इसमें बैंकिंग कोई अपवाद नहीं है। कारोबार वृद्धि और लाभप्रदता, सीधे नया ग्राहक आधार बढ़ाने और मौजूदा ग्राहकों से निरंतर होने वाले कारोबार पर निर्भर है। एक संतुष्ट ग्राहक बैंक का सबसे अच्छा दूत (एंबेसडर) होता है। आज के डिजिटल युग में ई-बैंकिंग एक ज़रूरत बन गई है, ग्राहक शाखा में जाने से बचना चाहता है। आज वक्त कागज़रहित, नकदीरहित बैंकिंग का है, आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में बैंकिंग के इन आयामों के बिना बैंकिंग की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए हमें ग्राहकों के बीच मोबाइल/इंटरनेट बैंकिंग आदि जैसे हमारे डिजिटल बैंकिंग उत्पादों के उपयोग को अधिक से अधिक बढ़ाना है तथा इनके सुरक्षित उपयोग के लिए साइबर सुरक्षा संबंधी जानकारी से अवगत कराते हुए ग्राहकों की हर प्रकार से सहायता करके उनकी सभी अपेक्षाओं की पूर्ति करनी है।

हमारे बैंक में राजभाषा को महज़ औपचारिकता न मानकर गंभीरतापूर्वक इसका कार्यान्वयन किया जा रहा है। आनेवाले दिनों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अपेक्षा के अनुरूप सभी लक्ष्यों को हासिल करते हुए हमारा ध्येय भारत सरकार द्वारा प्रदत्त 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' हासिल करना होना चाहिए। मैं केनरा बैंक परिवार के सभी सदस्यों का बैंक के प्रति उनकी लगन, निष्ठा एवं तत्परता के लिए आभार व्यक्त करता हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि बैंक ने जैसे आपके अथक प्रयासों के बलबूते इस चुनौतीपूर्ण समय का सामना करते हुए अपनी सफलता का परचम लहराया है, वैसे ही आगे भी हम सामूहिक प्रयास के साथ इस वर्ष के सभी वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए इसे शीर्ष पर पहुंचाने में कामयाब होंगे। मैं केनरा बैंक को ग्राहक सेवा के दृष्टिकोण से देश का सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाने की दिशा में आपके पूर्ण सहयोग की आशा करता हूँ।

अंत में मैं कहना चाहूंगा कि आप अपनी रचनाओं से 'केनरा ज्योति' को संवारते रहें ताकि इसकी ज्योति निरंतर प्रज्वलित होती रहे।

शुभकामनाओं सहित,

एल.वी. प्रभाकर

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य महा प्रबंधक का संदेश



प्रिय केनरा साथियो,

‘केनरा ज्योति’ के इस अविस्मरणीय 28वें अंक के माध्यम से अपने विचारों को आपके साथ साझा करते हुए मुझे अत्यंत पसन्नता हो रही है।

अगर आप रेत पर अपने कदमों के निशान छोड़ना चाहते हैं तो एक ही उपाय है – अपने कदम पीछे मत हटाइए। उसी प्रकार हमें अपने उत्कृष्ट कार्यों के माध्यम से बैंक को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना है। आज पूरे विश्व के साथ-साथ हमारा देश भी कोरोना महामारी की इस विभीषिका से सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ रहा है। मुझे इस बात का गर्व है कि हम केनरा साथियों ने ऐसी विकट परिस्थिति में भी अपने बैंक को आगे बढ़ाने के अपने इस अथक प्रयास में एकजुट होकर लगे रहे और काफी हद तक सफलता प्राप्त की है। दुनिया में कोविड-19 के चलते, डिजिटल पेमेंट में काफी बढ़ोतरी हुई है। अतः हमें तकनीक आधारित उत्पादों के प्रचार-प्रसार पर अधिक ज़ोर देना होगा जिससे डिजिटलीकरण को बढ़ावा मिल सके।

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करना, बैंकों के कुशल प्रबंधन एवं परिचालन का मापदंड है। इसकी गुणवत्ता का स्तर बैंक कर्मियों के सकारात्मक दृष्टिकोण और कुशल व्यवहार पर निर्भर करता है। बैंकिंग व्यवस्था के इस बदलते परिवेश में दिन-प्रतिदिन आ रही नई चुनौतियों से निपटने और कार्यनिष्पादन में सफल होने के लिए यह बेहद आवश्यक है कि हमारे मानव संसाधन का पूरा लाभ संगठन को मिले। अगर एकजुट होकर हम कार्य करे तो रास्ता आसान हो जाता है

और लक्ष्य साधा जा सकता है। वर्तमान बैंकिंग परिस्थितियों में कासा और खुदरा अग्रिम को बढ़ाने के साथ-साथ अनर्जक आस्ति (एनपीए) को कम करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। हमारे बैंक में शिक्षण-प्रशिक्षण पर भी ज़ोर दिया जाता रहा है जिससे कर्मचारी बेहतर रूप से प्रशिक्षित होकर अपना कार्य निर्वाह बैंक के अपेक्षानुकूल कर सके।

हमें विपणन के विभिन्न माध्यमों में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग कर बैंकिंग कारोबार की उच्चतम सफलता के शिखर तक पहुँचने का हर संभव प्रयास करना है। इसी क्रम में हमारे बैंक द्वारा प्रचार-प्रसार की सामग्रियों को क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालयों एवं शाखाओं के द्वारा सतत उत्कृष्ट ग्राहक सेवा उपलब्ध कराने के लिए हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया जाना भी अत्यंत आवश्यक है।

मुझे आशा है कि ‘केनरा ज्योति’ में राजभाषा सहित बैंकिंग और अन्यान्य विषयों पर रचित लेख से हमारे कर्मचारियों का राजभाषा के साथ-साथ बैंकिंग विषयों से संबंधित ज्ञान में वृद्धि होगी। सभी लेखकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक

मुख्य संपादक का संदेश



प्रिय पाठक,

‘केनरा ज्योति’ के 28वें अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। परिवर्तन जीवन का अभिन्न हिस्सा है। विश्व के अन्य देशों के साथ-साथ हमारे देश की आर्थिक परिस्थितियां तीव्र गति से बदल रही हैं। इस प्रकार कारोबार विकास के लिए समय की मांग के अनुरूप संगठनात्मक परिवर्तन लाना भी आवश्यक हो जाता है। बैंकिंग क्षेत्र भी नित-नए परिवर्तन से गुजर रहा है और परिणामस्वरूप नई-नई चुनौतियों का आना भी स्वाभाविक ही है। इन चुनौतियों का डटकर सामना करके ही हम अपने कॉर्पोरेट लक्ष्यों को हासिल करने में समर्थ हो सकते हैं। मौजूदा परिवेश में, बैंक द्वारा समावेशी विकास सहित खुदरा संविभाग की संवृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करना अपरिहार्य है। आर्थिक जगत के धरातल पर सभी को जानकारी प्रदान करने और समाज के हर तबके को अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए जो ठोस कदम उठाए जा रहे हैं, उसमें राजभाषा व क्षेत्रीय भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

‘केनरा ज्योति’ के प्रथम अंक से लेकर अब तक हम बैंकिंग के विभिन्न आयामों पर लेख सहित अन्य समसामयिक विषयों पर

लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। पत्रिका के प्रत्येक अंक में लेखों की गुणवत्ता और पाठकों की अभिरुचि का विशेष ध्यान रखा जाता है। आप पायेंगे कि इस अंक में भी बैंकिंग सहित समसामयिक विषयों पर लेख, कहानी, लघु कथा, कविता इत्यादि को समान स्थान दिया गया है। इसके अलावा, राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों पर भी समुचित स्थान दिया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि ‘केनरा ज्योति’ का यह अंक अपनी अंतर्वस्तु, साज-सज्जा व अन्य सजावट आपके मन को मोह लेगी। मैं उन सभी रचनाकारों और लेखकों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपने योगदान से पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया है। हमारे प्रिय पाठकों से प्रीतिक्रिया स्वागत योग्य है। इससे हमें पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने व इसे और अधिक रुचिकर बनाने में मदद मिलेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

साइबर सुरक्षा के उपाय एवं जागरूकता

आलेख

प्रथम पुरस्कार

केनरा बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय ऑनलाइन संगोष्ठी

बे शक, दुनिया रहने के लिए एक खूबसूरत जगह रही है और रहेगी, लेकिन यह कभी भी आदर्श-लोक नहीं थी और न ही होगी। अपराध पूर्व-ऐतिहासिक युग में भी कायम रहा और हर युग में रहेगा। मानव सभ्यता समाज के बदलते स्वरूप के साथ अपराध के तरीके में बदलाव हुआ है। उदाहरण के लिए, जब धन भौतिक रूप में था, तो उसे चोरों ने चुरा लिया या लुटेरों ने लूट लिया। बाद में जब लोगों ने बैंक में पैसा रखना शुरू किया तो बैंक डकैती आम हो गई। अब जब लोग तकनीक के जानकार हो रहे हैं, साइबर अपराधी न केवल व्यक्तियों और संस्थानों को बल्कि राष्ट्रों को भी निशाना बना रहे हैं।

यहां तक कि दुनिया के सॉफ्टवेयर क्षेत्र के कई नामी व्यक्ति भी हैकिंग का शिकार हो गए। यदि ऐसे व्यक्ति साइबर खतरों से प्रभावित हो सकते हैं तो आम लोगों की दुर्दशा का अंदाज़ा लगाया ही जा सकता है। साइबर खतरे से कोई भी व्यक्ति पूरी तरह सुरक्षित नहीं है।

दुनिया में 700 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं और साइबर धोखाधड़ी के मामलों की संख्या भी कई गुना बढ़ गई है। इलेक्ट्रॉनिक और आईटी राज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, मार्च 2019 से दिसंबर 2019 तक बैंक धोखाधड़ी के 52000 मामलों में भारतीयों को ₹226 करोड़ का नुकसान हुआ। पिछले 12 महीनों के आंकड़ों की तुलना में मामलों की संख्या में 60 प्रतिशत का उछाल आया है। हाल ही की खबरों में, एनएचएटी के मेल सर्वर पर रैंसमवेयर हमले के ज़रिए चोरी की गई कुछ फाइलों का विवरण इंटरनेट पर सामने आया है। हैकर्स ने यह भी साझा किया कि जिस फाइल को उन्होंने एन्क्रिप्ट किया है, उसे डीक्रिप्ट करने के लिए कुंजी कैसे खरीदें। एक अध्ययन के अनुसार यह तथ्य सामने आया है कि हैकर्स हर 39 सेकंड में औसतन 2244 बार हमला करते हैं और साइबर अपराध से सालाना 600 अरब डॉलर का नुकसान होता है।

साइबर सुरक्षा :

बैंक को अपने व्यवसाय डेटा, अपने कैंशप्लो और अपने ग्राहकों को ऑनलाइन व्यवहार के प्रति सुरक्षित रखने के लिए



श्री कृष्ण कुमार
 वरिष्ठ प्रबंधक
 अध्ययन एवं विकास केन्द्र
 चंडीगढ़

विभिन्न साइबर सुरक्षा उपायों का उपयोग करना चाहिए। इन उपायों का उद्देश्य विभिन्न स्रोतों से जोखिमों को रोकना है, जिनमें शामिल हैं:

1. इंटरनेट जनित हमले, जैसे-स्पाइवेयर या मैलवेयर, हैकिंग, डिस्ट्रिब्यूटेड डेनियल ऑफ सर्विस (डीडीओएस), रैंसमवेयर, स्निफिंग, स्पूर्फिंग, फिशिंग, विशिंग, स्मिशिंग, मालविज्ञापन, जूस जैकिंग, मैन इन द मिडल (एमआईटीएम) अटैक, रैम स्कैपर्स, क्रिप्टो-जैकिंग, मोबाइल सुरक्षा, सिम क्लोनिंग सिम स्वैप, अन्य डेस्क।

हैकर्स यूजर को किसी भी डेस्क ऐप को डाउनलोड और एक्टिवेट करने के लिए राजी करते हैं। वे पीड़ित को किसी भी अन्य ऐप की तरह ऐप अनुमति प्रदान करने और 9 अंकों के कोड का उपयोग करके पीड़ित के मोबाइल तक रिमोट एक्सेस प्राप्त करने के लिए कहेंगे। मोबाइल फोन सुरक्षा उपायों के कुछ तरीकों पर नीचे प्रकाश डाला गया है :

भौतिक सुरक्षा :

बायोमेट्रिक्स, पिन, पासवर्ड या पैटर्न लॉक के साथ ऑटो-लॉक सक्षम करें, सिम कार्ड लॉक करने के लिए पिन का उपयोग करें, आईएमईआई नंबर रिकॉर्ड करें और खोए या चोरी हुए उपकरणों की रिपोर्ट करें।

वायरलेस सुरक्षा :

उपयोग में न होने पर मोबाइल डेटा और ब्लूटूथ बंद रखें, ब्लूटूथ पेयरिंग के दौरान पासवर्ड का उपयोग करें, केवल विश्वसनीय नेटवर्क से कनेक्ट करें।

डेटा सुरक्षा:

मोबाइल डेटा का हमेशा बैक अप रखें, मोबाइल में ट्रांसफर करने से पहले संवेदनशील जानकारी जैसे-पासवर्ड, मोबाइल में पिन, एंटीवायरस से स्कैन किए जाने वाले डेटा को न रखें।

एप्लिकेशन सुरक्षा:

ऐप्स के नवीनतम संस्करण के लिए अपडेट करें, हमेशा विश्वसनीय साइट से ऐप्स डाउनलोड करें, सभी ऐप्स की जानकारी तक पहुंच की अनुमति न दें।

आज ग्राहकों को फर्जी संदेश मिल रहे हैं जो उन्हें अपने ऋण ईएमआई को स्थगित करने के लिए ओटीपी साझा करने के लिए कहा जाता है। यहां तक कि फर्जी यूपीआई आईडी जैसे- pmcaresbi, pmcareupi, pmcaresicici आदि भी साइबर अपराधियों द्वारा कोरोनावायरस से राहत के लिए फंड इकट्ठा करने के लिए लॉन्च किए गए थे।

साइबर सुरक्षा उपाय:

1. उपयोग करने से पहले साइट डोमेन आईडी की जांच करें। हमेशा प्रामाणिक साइट का उपयोग करें;
2. https:// में 's' चेक करें, हरा और पैडलॉक साइन करें, यह इंगित करता है कि वेबसाइट हैकर्स से बचाने के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग करती है।
3. किसी भी अनौपचारिक लिंक पर क्लिक न करें जो ओटीपी/बैंक विवरण मांगता है क्योंकि बैंक इसे साझा करने के लिए कभी नहीं कहता है।
4. फर्जी योजनाओं से सावधान रहें। केवल उन्हीं ऐप और वेबसाइट का उपयोग करें जिनकी प्रामाणिकता स्थापित की गई है।



5. ऑपरेटिंग सिस्टम को उसके नवीनतम संस्करण में नियमित रूप से अपडेट करें। किसी भी प्रतिष्ठित प्रदाता के सुरक्षा सॉफ्टवेयर का उपयोग करें और इसे नियमित अंतराल पर अपडेट करें।
6. नियमित अंतराल पर पासवर्ड बदलें।
7. हैकर्स तक आसान पहुंच प्रदान करने के लिए अपनी सारी जानकारी सार्वजनिक डोमेन पर साझा न करें।
8. किसी भी अनधिकृत लेनदेन की तुरंत रिपोर्ट करें।
9. बैंक और साइबर सेल को और अधिक नुकसान होने से बचने के लिए डोमेन विवरण देखने के लिए whois.com जैसे खोज इंजन का उपयोग करें।
10. दो कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करना सुनिश्चित करें और देखें कि पासवर्ड अनुमान लगाने वाले हमलों से कैसे बचा जाए।
11. नियंत्रण पहुंच : सुनिश्चित करें कि व्यक्ति केवल डेटा और सेवाओं तक पहुंच सकते हैं जिसके लिए वे अधिकृत हैं।
12. अनधिकृत उपयोगकर्ताओं तक पहुंच को प्रतिबंधित करें।
13. आवेदन नियंत्रण के माध्यम से डेटा या सेवाओं तक पहुंच को सीमित करें।
14. जो भी जानकारी सिस्टम से नकल कर स्टोरेज डिवाइज़ में सहेजा जा सकता है, उसे प्रतिबंधित करें।
15. ई-मेल अटैचमेंट भेजने और प्राप्त करने को सीमित करें।

साइबर सुरक्षा हेतु जागरूकता :

साइबर खतरे से लड़ने का एकमात्र तरीका सभी को शिक्षित करना है। हमें खुद को डिजिटल दुनिया में हुई नई प्रगति से अद्यतन रखना होगा और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं :

1. कर्मचारियों के जोखिम प्रोफाइल और ज्ञान स्तर के आधार पर आवश्यकतानुरूप प्रशिक्षण अभियान बनाएं।
2. ई-लर्निंग, माइक्रो और नैनो-लर्निंग और गेमिफाइड प्रशिक्षण सहित प्रशिक्षण प्रकार की एक श्रृंखला का उपयोग करें और कर्मचारियों को नवोन्मेषी तरीके से सोचने की दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता अभियान का आयोजन करें। प्रशिक्षण पर अपने कर्मचारियों से प्रतिक्रिया लेना भी उचित होगा।
3. कर्मचारियों को सिमुलेशन और गेमिफाइड परिदृश्यों के साथ अपने ज्ञान का परीक्षण करने दें।
4. अपने कर्मचारियों को यह स्पष्ट करके सशक्त बनाएं कि उनके पास साइबर हमलों और खतरों को रोकने की शक्ति है।
5. अच्छे और बुरे व्यवहार को पहचानें और प्रतिक्रिया प्रदान करें।

कोविड-19 महामारी ने संगठन को समायोजित करने के लिए मजबूर किया है, जहां लोग काम करते हैं, संवाद और जानकारी साझा करते हैं, और कैसे उत्पादों और सेवाओं का विपणन किया जाता है।

1. जब आपको अपने कार्य संबंधी कर्तव्यों का निर्वहन करने की आवश्यकता होती है तो नेटवर्क से कनेक्ट करने के लिए हमारे वीपीएन का उपयोग करें।
2. कार्य स्थल पर केवल अपने कंप्यूटर पर कार्य करें और अपने घर के कंप्यूटर या व्यक्तिगत उपकरणों के साथ कार्य संबंधी डेटा और जानकारी साझा न करें।

3. सुनिश्चित करें कि आपके कंप्यूटर में नवीनतम अनुप्रयोग, ऑपरेटिंग सिस्टम, नेटवर्क टूल और आंतरिक सॉफ्टवेयर स्थापित हैं।
4. अपने कंप्यूटर पर मैलवेयर सुरक्षा और एंटी-स्पैम सॉफ्टवेयर को अक्षम न करें।
5. जानकारी साझा करने के बारे में हमारी नीतियों का पालन करें। केवल स्वीकृत क्लाउड-शेयरिंग टूल का उपयोग करें। यदि आप इस संबंध में किसी भी बात से पूरी संतुष्ट नहीं हैं तो अवश्य पूछें।
6. अपने पासवर्ड को सुरक्षित करें, जहां आप उन्हें दर्ज करते हैं, उस पर ध्यान दें और कई सिस्टम पर एक ही पासवर्ड का पुनः उपयोग न करें।
7. आवश्यक साइबर सुरक्षा सर्वोत्तम प्रथा को याद रखें। सभी अवांछित ई-मेल, पाठ संदेश, सोशल मीडिया चैट और अटैचमेंट से सतर्क रहें। संदेह होने पर – क्लिक न करें।
8. सभी मोबाइल उपकरणों पर ब्लूटूथ ऑटो-डिस्कवरी बंद करें।
9. कभी भी ऐसे सार्वजनिक वाई-फाई नेटवर्क से कनेक्ट न करें जो पासवर्ड सुरक्षित न हो।
10. यहां तक कि जब आप घर पर कार्य कर रहे हों – अपने लैपटॉप को अनलॉक और उपेक्षित न छोड़ें, किसी भी मुद्रित दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से स्टोर न करें (उन्हें अपनी डेस्क पर न छोड़ें) और हमेशा जागरूक रहें।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साइबर- सुरक्षा, युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुरक्षा संबंधी चिंताओं में से एक है। साइबर सुरक्षा के प्रति हमें सतत रूप से जागरूक रहने के साथ-साथ साइबर सुरक्षा के लिए निर्धारित मानकों का कड़ाई से अनुपालन करने की आवश्यकता है। साइबर हमलों के तरीकों और उनसे बचने के उपायों के बारे में लोगों को शिक्षित करके साइबर हमलों से बचा जा सकता है।



बैंकिंग सेवाओं में स्थानीय भाषाओं का महत्व

आलेख

भाषा अभिव्यक्ति एवं विचार-विनिमय का सांकेतिक साधन है। संसार में प्रत्येक प्राणी अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक एवं लिखित माध्यम का प्रयोग करता है। मौखिक भाषा में मनुष्य बोलकर, हाथी चिंघाड कर, कोयल कू-कू कर अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। मूक-बधिरों की अपनी सांकेतिक भाषा है जो अंग-प्रत्यंग के संचालन तथा मुद्राओं से जुड़ी है। व्यापक अर्थ में कहें तो विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा है। विद्वान पतंजलि के अनुसार - 'भाषा वह व्यापार है जिससे व्यक्ति वर्णनात्मक या शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।'

आखिर मानव भाषा सीखता कहाँ से है? क्या भाषा अर्जित संपत्ति है? दरअसल, मानव अपने वातावरण एवं समाज से भाषा सीखता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण टारजन की कहानी है। मानव बालक जो जंगल में जानवरों के साथ रह कर बड़ा हुआ और जानवरों के साथ रह कर जानवरों की भाषा बोलने लगा। अतः भाषा का मूल तत्व अनुकरण है। अरस्तु के शब्दों में - 'अनुकरण मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है'। धीरे-धीरे वह सीख जाता है। भाषा पैतृक संपत्ति भी नहीं है। यदि ऐसा होता तो भारत से बाहर कहीं भी रहकर बिना प्रयास के हिंदी भाषा समझा और बोला जा सकता था। भाषा एक परंपरा भी है। व्यक्ति उसका अर्जन समाज और परंपरा से करता है। समाज व परंपरा भाषा के जनक-जननी हैं। भाषा परिवर्तनशील है। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं है। सभी भाषाओं की भौगोलिक सीमा होती है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक संरचना होती है जो अपने-आप में विशिष्ट स्वरूप एवं मानक रूप होता है। दुनिया भर में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं।

भाषा संप्रेषण का माध्यम होने के कारण व्यवसाय के साथ सीधे जुड़ी हुई है। भारत एक ऐसा देश है, जहां हर शहर ही नहीं, बल्कि हर गांव, हर ज़िले के साथ भाषा भी बदल जाती है। विभिन्न सभ्यता, संस्कृति के साथ भारत में 122 भाषाएं हैं जिसमें 22 भाषाओं को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त है।

आज प्रत्येक व्यवसाय में भाषा और उसमें स्थानीय भाषा का अपना एक विशिष्ट महत्व है। उदारीकरण के पश्चात् संपूर्ण विश्व में व्यापार को बढ़ाने के लिए प्रत्येक देश अपनी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के



सीमा
 प्रबंधक(राजभाषा)
 क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

कार्यकारी अधिकारी सर्वप्रथम उस देश की भाषा सीखने पर महत्व देते हैं। आज भारतीय बैंकिंग व्यवस्था का स्वरूप लगातार बदल रहा है। वर्तमान युग में देश के आर्थिक विकास में कृषि, उद्योग एवं व्यापार के विकास के लिए बैंक एवं बैंकिंग व्यवस्था एक अनिवार्य आवश्यकता मानी जाती है।

बैंक देश की सम्पूर्ण संपत्ति को केंद्रित करके देश में उत्पादन के कार्यों में लगाते हैं जिससे पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलता है और उत्पादन की प्रगति में सहायता मिलती है। हम जानते हैं कि भाषा कारोबार का माध्यम होती है। आज यही कारण है कि विश्व समुदाय के कई देश भारत को अपना बाज़ार मानकर अपने कर्मचारियों को हिंदी और हिंदीतर भाषाओं की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उनका मुख्य उद्देश्य अपने व्यवसाय को बढ़ाना है। पूरे भारत में जिस प्रकार हिंदी राजभाषा एक संपर्क भाषा के रूप में व्याप्त है, वह किसी भी संस्था एवं संगठन के व्यवसाय का मुख्य माध्यम हो सकती है। चूंकि, बैंकों का ग्राहक-वर्ग मुख्य रूप से हिंदी और अन्य स्थानीय व प्रत्येक राज्य की विशिष्ट भाषा के प्रयोगकर्ता हैं, अतः यह उम्मीद की जाती है कि बैंकों में कारोबार की भाषा हिंदी अथवा आधुनिक भारतीय भाषाएं बनें। ग्रामीण क्षेत्र में लोगों का जीवन स्तर उठाने में बैंकों की अहम भूमिका होती है। अतः प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सामाजिक बैंकिंग का ही रूप माना जाता है। आज बैंक अपने कुल ऋण का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित करता है। गांव के किसान व कृषि

मज़दूर सभी स्थानीय भाषा सहित हिंदी को अच्छी तरह से समझते हैं और बोलते हैं। ऐसे में बैंकों द्वारा अपनी कारोबारी भाषा के रूप में हिंदी और हिंदीतर भाषाओं को अपनाना एक राष्ट्रीय दायित्व एवं राष्ट्र की अपेक्षा भी बन जाती है।

आर्थिक जगत के भूमंडलीय परिवेश में पिछले दो दशक से व्यापक परिवर्तन हो रहा है जिसमें से पिछले दशक में आर्थिक जगत में नित नए परिवर्तन की आंधी सी आ गई है। किसी भी समाज या राष्ट्र के आर्थिक जगत की धुरी उस देश की बैंकिंग व्यवस्था होती है। सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ भी परिवर्तित होती हैं। इन सबके परिणामस्वरूप, बैंकिंग को भी तदनुसार परिवर्तन करना पड़ता है। भूमंडलीकरण के साथ-साथ देशगत परिस्थितियों ने भी बाज़ार के स्वरूप में लगातार परिवर्तन करना आरंभ किया है। इस परिवर्तन से जनसामान्य के जीवन में भी बदलाव आना शुरू हुआ जिसके परिणामस्वरूप उनके आर्थिक जीवन में भी प्रगति हुई है। हम भारत के बैंकिंग कारोबार तथा वित्तीय क्षेत्र की ओर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में ही नहीं वरन् शहरी क्षेत्र में भी जनता में वित्तीय साक्षरता लगातार बढ़ रही है। किसी भी देश के पूँजी बाज़ार का सशक्त होना उसकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। यदि बैंकिंग क्षेत्र की चर्चा करें तो वर्ष 2013 तक देश में प्रति 100 व्यक्तियों में से सिर्फ 31 व्यक्तियों और प्रति 100 वयस्क व्यक्तियों में सिर्फ 59 व्यक्तियों के पास बैंक खाता था। देश के 51% किसान को बैंकिंग या अन्य वित्तीय साधनों से ऋण सुविधा नहीं मिल पाती थी क्योंकि वे बैंकिंग की जटिल प्रक्रिया और भाषाई अवरोध के कारण साहुकारों के पास जाना ज़्यादा पसंद करते थे। बैंकिंग क्षेत्र में हाल ही में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रधानमंत्री जन-धन योजना से हुआ है। देश में 25 करोड़ नए बैंक खाते खोले गए। इस योजना की सफलता का मुख्य कारण रहा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग द्वारा सुदूर क्षेत्रों के जन-जन तक पहुँचना। 'मेरा खाता भाग्य विधाता' जैसे स्लोगन अत्यंत कारगर सिद्ध हुए, किन्तु खाता खोल देने मात्र से ही यह योजना सफल नहीं हो सकती है। इन करोड़ों खातेदारों को बैंकिंग की दैनिक गतिविधियों से जोड़ना सबसे बड़ी चुनौती है, अभी तक बैंकिंग उद्योग द्वारा इन्हें अपनी भाषा में पास-बुक एवं रुपये कार्ड दे पाना संभव नहीं हो पाया है। इस चुनौती से निपटने का माध्यम भी हिन्दी और भारतीय भाषाएँ ही हैं।

इस स्थिति को भाँपते हुए निजी क्षेत्र के बैंकों ने खुदरा कारोबार को बढ़ाने के लिए अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में प्रवेश



कर अपना अंग्रेज़ी चोला उतार कर फेंकना शुरू किया है। राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश के बाद बैंकिंग व्यवहार में कोर बैंकिंग सॉल्यूशन में भी हिंदी का समावेश कर बैंकों ने वित्तीय प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक नए भाषाई परिवेश की शुरुआत की है। बैंकिंग व्यवसाय की भाषा अपेक्षाकृत सरल है और स्थानीय भाषा की जानकारी पूर्ण होनी चाहिए ताकि ग्राहकों तक उत्पादों या सेवाओं की जानकारी आसानी से पहुंचाई जा सके। अतः बैंकिंग व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रादेशिक या स्थानीय भाषाओं में अधिकतर संप्रेषण करना चाहिए। हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। आज अधिकतर विदेशी कंपनियां अपने उत्पादों को बेचने के लिए भारतीय भाषाओं का प्रयोग कर रही हैं। आज उनकी कंपनियों के विज्ञापन भारतीय भाषाओं में प्रचारित होते हैं क्योंकि ये स्थानीय भाषाओं के प्रयोग के महत्व को समझ चुकी हैं।

मूल प्रश्न ये है कि यदि बैंकिंग सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाना है और अपने बैंक का विकास करना है, तो स्थानीय भाषा के महत्व को समझना ही होगा अपितु इसे अपनी व्यवस्था का अंग भी बनाना होगा। यह एक मानवीय सत्य है कि जैसे ही हम विदेश में होते हैं तो किसी भी भारतीय को अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी में बात करते सुनते हैं तो एक अद्भुत आत्मीयता महसूस करते हैं, चाहे हम भारत के किसी भी प्रांत से संबंध क्यों न रखते हों। इसी प्रकार, जब हम अपने प्रांत में होते हैं तो अपनी स्थानीय भाषा से भी वही आत्मीयता महसूस करते हैं। यदि हम इसी मानसिकता को बनाये रखते हुए बैंकिंग सेवा मुहैया कराते हैं तो अवश्य ही हम बैंकिंग कारोबार को बढ़ा सकते हैं। उदाहरणतः यदि किसी हिंदीतर राज्य जैसे केरल में स्थानांतरित हिंदी भाषाई कर्मचारी यदि वहां की स्थानीय मलयालम

भाषा में, ग्राहक से बैंक के किसी उत्पाद की बात करता है, तो वह ग्राहक उस बैंक उत्पाद को खरीदने/समझने के लिए विशेष रुचि दिखाता है। उसे मन ही मन बहुत अच्छा लगता है कि उसकी भाषा में बात की जा रही है।

भाषा या जुबान एक बहते जल की धारा के समान है, जो जहां से भी गुजरती है वहां की दूसरी चीजों को अपने साथ समेटते हुए आगे बढ़ती जाती है। भारत सरकार के वित्तीय विभाग के राजभाषा विभाग द्वारा परिकल्पित एक कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया है जिसका नाम 'आपसी संवाद- सार्थक दिशा'। इसका उद्देश्य अहिंदी भाषाई क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करना था। यह प्रयोग काफी हद तक सफल सिद्ध हुआ।

हमारे केनरा बैंक ने स्थानीय भाषाओं के प्रयोग हेतु 'लोकल के लिए वोकल बनें' कार्यक्रम प्रारंभ किया है। क्षेत्र में जहां हिंदी बोली जाती है, यदि वहां कोई कन्नड़ भाषी बैंक ग्राहक आता है तो कर्मचारी उनसे कन्नड़ में बोलता है, जैसे उदाहरण के लिए -

कन्नड़ : निमगे एनु बेकु?

हिंदी : आप को क्या चाहिए?

अंग्रेज़ी : What do you want?

इस प्रकार यदि कर्मचारी बात करता है तो ग्राहक उस कर्मचारी से तुरंत जुड़ाव महसूस करता है। वह यह भी समझ जाता है कि यह व्यक्ति दूसरे प्रांत का है, परन्तु उनकी स्थानीय भाषा में बात करते ही वह बहुत प्रसन्नता भी महसूस करता है। इस प्रकार यदि बैंक के कर्मचारी और अधिकारी जिस प्रांत में वे कार्यरत हैं, उस प्रांत की स्थानीय भाषा सीख लेते हैं तो, जब वे ग्राहक से उसी की भाषा में बात करते हैं और अपने उत्पाद के बारे में बताते हैं तो वास्तव में ग्राहक एक जुड़ाव का अनुभव करेगा और उत्पाद को खरीदेगा। हमारे बैंक में सभी कर्मचारी 'लोकल के लिए वोकल बनें' कार्यक्रम की सफलता हेतु ग्राहकों की स्थानीय भाषा में कुछ बोलना आरंभ किया तो उस शाखा के कारोबार में अच्छे परिणाम आयेंगे। 'बूंद-बूंद से सागर भरता है' कहावत से प्रेरित होकर यदि सभी लोग इस दिशा में कार्य करें तो वास्तव में बैंक के कारोबार में बढ़ोतरी होगी। बैंक में आने वाले ग्राहक स्थानीय ही होते हैं और कुछ लोग कम पढ़े-लिखे होते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें वहाँ की स्थानीय भाषा ही आती है, वह हिंदी और

अंग्रेज़ी समझ नहीं पाते हैं। ऐसे में स्थानीय भाषा ही प्रभाव डाल सकती है। क्षेत्रीय भाषाओं के इस्तेमाल से, क्षेत्रीय भाषा और बोली भी संरक्षित होती है, क्योंकि वो किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रहती। स्थानीय भाषा का सर्वाधिक प्रभाव आप सिनेमा जगत पर भी देख सकते हैं। आज सिनेमा जगत का व्यवसाय कई गुना बढ़ गया है। इसका सबसे बड़ा कारण बहुत-सी फिल्मों का अन्य भाषाओं में डबिंग किया जाना है। किसी भी भाषा की फिल्म स्थानीय भाषा में डब कर दिखाई जाती है, तो फिल्म का व्यवसाय बहुत बढ़ जाता है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने उत्पादों के विज्ञापन भारतीय भाषाओं में करती हैं। भाषा से आत्मीयता बढ़ती है जो किसी भी व्यवसाय में चार चांद लगा सकता है।

स्थानीय भाषा के महत्व को समझाते हुए हाल ही में इलाहाबाद उच्च - न्यायालय के एक कार्यक्रम में राष्ट्रपति ने हाईकोर्ट के फैसले को ऐसी भाषा में दिए जाने पर जोर दिया है जिसे याची जानते और समझते हों। अगर स्थानीय भाषाओं में फैसले दिए जाने लगे तो वादी को वकील या अन्य व्यक्तियों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। हाल ही में डिजिटल बैंकिंग के प्रचार-प्रसार के लिए भारतीय भुगतान निगम द्वारा भीम ऐप 13 भाषाओं में जारी किया गया है। इससे हिंदीतर क्षेत्र के लोग जो हिंदी या अंग्रेज़ी नहीं जानते, वो भी इसे प्रयोग कर सकेंगे। भीम ऐप के प्रयोग में बढ़ोतरी हुई है। बैंकिंग कोड भारतीय मानक बोर्ड द्वारा निकाली गई सूचानात्मक चित्र पुस्तक है। जो 22 भाषाओं में प्रकाशित की गई है, जिसमें बैंक के विभिन्न खातों के संबंध में जानकारी दी गई है।

आज के प्रति-पल स्पर्धा के इस युग में, बैंकों को अलग-अलग उत्पादों को लेकर अभियान चलाने पड़ते हैं। यदि इन अभियानों की प्रचार-प्रसार सामग्री स्थानीय भाषा में हो और उत्पाद के बारे में स्थानीय भाषा में ही जानकारी दी जाए, तो यह निश्चित है कि बैंक का अभियान अवश्य सफल होगा और शाखा का कारोबार बढ़ेगा क्योंकि एक अशिक्षित व्यक्ति भी इस उत्पाद को आसानी से समझ सकता है और वह बैंक के कारोबार बढ़ाने में सहयोग दे सकता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि बैंकिंग कारोबार प्रत्येक राज्य में फैला हुआ है, हम सभी इस अनमोल खज़ाने ('लोकल के लिए वोकल बनें') का भरपूर प्रयोग कर अपने बैंकिंग कारोबार को बढ़ा सकते हैं।



सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विकास में योगदान

आलेख

भा रत, पिछले दो वर्षों में विश्व की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक अर्थव्यवस्था के रूप में उभर कर सामने आया है। कोविड-19 के कारण स्वास्थ्य क्षेत्र सभी देशों की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। भारत में भी अब स्वास्थ्य क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे में सुधार के बारे में चर्चा जोर पकड़ रही है। भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विकास को कई कारक गति प्रदान कर रहे हैं – जैसे – जनसंख्या, बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग, जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों का बढ़ता अनुपात, टेलीमेडिसिन पर जोर, निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी और एफडीआई प्रवाह में वृद्धि, आदि।

2019-20 में 50 बिलियन अमरीकी डॉलर तक का बड़ा एफडीआई अंतर्वाह प्राप्त कर, विशेष रूप से स्वास्थ्य-सेवा-क्षेत्र व्यापक हो गया है। स्वास्थ्य-सेवा भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक बन गया है। यह 2016 से 47 लाख लोगों को रोजगार देते हुए 22% की सी.ए.जी.आर. से बढ़ रहा है, इस क्षेत्र में 27 लाख अतिरिक्त रोजगार और 2022 तक प्रति वर्ष 5,00,000 से अधिक नई नौकरियां सृजित करने की क्षमता है।



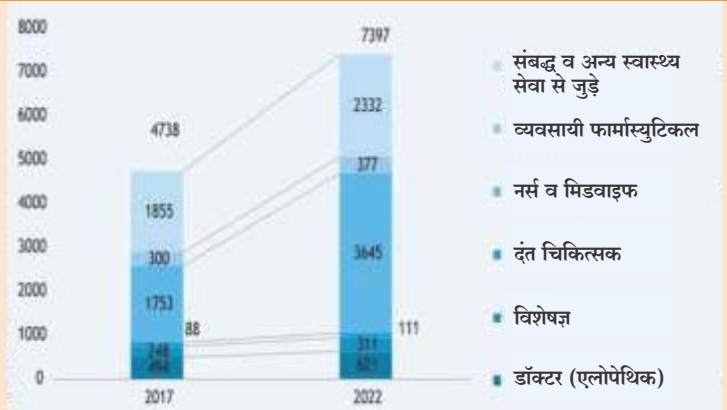
रवनीत सिंह
प्रबंधक
अध्ययन एवं विकास केन्द्र,
चंडीगढ़

अस्पताल के क्षेत्र में, महानगरीय शहरों से परे, टियर-2 और टियर-3 शहरों में निजी भागीदारों का विस्तार, एक आकर्षक निवेश का अवसर प्रदान करता है। इन्वेस्ट इंडिया के इन्वेस्टमेंट ग्रिड के अनुसार, देश के अस्पताल/ चिकित्सा बुनियादी ढाँचा उप-क्षेत्र में 32 बिलियन अमरीकी डॉलर (₹.2.3 लाख करोड़) के लगभग 600 निवेश के अवसर उपलब्ध हैं।

भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का विकास रुझान (बिलियन अमरीकी डॉलर)



भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रत्यक्ष नौकरियां, 2017 - 2022 अपेक्षित (हज़ारों में)



भारत सरकार ने स्वास्थ्य-सेवा-क्षेत्र को मजबूत करने के लिए गहन संरचनात्मक और उत्तरोत्तर सुधार किए हैं। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एफडीआई को प्रोत्साहित करने के लिए अनुकूल नीतियों की भी घोषणा की है। 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' पैकेज में उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं सहित स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए फार्मास्युटिकल और चिकित्सा उपकरणों के घरेलू विनिर्माण को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, भारत आध्यात्मिक और लोक कल्याण पर्यटन का महत्वपूर्ण केंद्र बनने की दिशा में कार्य कर रहा है।

फार्मास्युटिकल के संबंध में, भारत के पास (आत्मनिर्भर भारत) पहल के तहत, हालिया सरकारी योजनाओं द्वारा समर्थित घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने का अवसर है। इसके अलावा, 2018 और 2024 के बीच, 251 बिलियन अमरीकी डालर के पेटेंट विश्व-स्तर पर समाप्त होने की उम्मीद है, जो पेटेंट बाजार सहित देश के फार्मास्युटिकल क्षेत्र के लिए एक आकर्षक अवसर प्रदान करता है। जेनेरिक औषधि के अलावा, भारत के फार्मास्युटिकल क्षेत्र के अन्य क्षेत्र में निवेश के अवसर हैं, जिनमें ओवर-द-काउंटर औषधि, टीके और अनुबंध निर्माण और अनुसंधान शामिल हैं।

चिकित्सा उपकरणों और उपकरण क्षेत्र में, नैदानिक और विकृति विज्ञान केंद्रों के विस्तार के साथ-साथ लघु निदान में वृद्धि की उच्च संभावनाएं हैं। चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों में भारत की अंतर्निहित ताकत को देखते हुए, मेडिकल वैल्यू ट्रैवल, विशेष रूप से वेलनेस टूरिज्म में भी उज्ज्वल संभावनाएं हैं।

देश में बेकाबू हुई कोरोना वायरस की दूसरी लहर के प्रकोप ने अब तक के सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। ऐसे में वित्त मंत्रालय ने ₹3,00,000 की आपात ऋण सुविधा गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) का दायरा बढ़ाते हुए उसमें स्वास्थ्य-सेवा-क्षेत्र को भी शामिल कर लिया है। महामारी ने भी टेलीमेडिसिन सहित डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने में तेजी लाई है। दूसरी लहर के खिलाफ हमारी लड़ाई में, सभी हितधारकों- सरकार, अस्पताल, फार्मसी, वैक्सिन और दवा निर्माताओं और आयातकों, चिकित्सा ऑक्सीजन निर्माता और आपूर्तिकर्ता, महत्वपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल आपूर्ति में लगे निजी ऑपरेटर के लिए वित्तपोषण से किसी भी बाधा को दूर करना और आम आदमी के स्वास्थ्य को सर्वोपरि रखते हुए एक व्यापक एवं लक्षित नीति बनाये जाने की आवश्यकता है। इस दिशा में की गई कुछ महत्वपूर्ण पहल निम्नानुसार हैं :



'प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर स्वस्थ भारत योजना' के अंतर्गत मुख्य पहल निम्नलिखित हैं :

- 17,788 ग्रामीण और 11,024 शहरी स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्र बनाना।
- वायरोलॉजी के लिए 4 क्षेत्रीय राष्ट्रीय संस्थान।
- 15 स्वास्थ्य आपात ऑपरेशन केन्द्र और 2 मोबाइल अस्पताल।
- सभी जिलों में एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला और 11 राज्यों में ब्लॉक सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाइयों का निर्माण।
- 602 जिले और 12 केन्द्रीय संस्थानों में क्रिटिकल केयर अस्पताल ब्लॉक स्थापित करना।
- राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी), इसकी पांच क्षेत्रीय शाखाओं और 20 महानगर स्वास्थ्य निगरानी इकाइयों को सुदृढ़ करना।
- एकीकृत स्वास्थ्य सूचना पोर्टल का सभी राज्यों/संघ शासित प्रदेशों में विस्तार ताकि सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला को जोड़ा जा सके।
- 17 नई सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाइयों को चालू करना और 33 मौजूदा सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाइयों को मजबूत करना।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान प्लेटफॉर्म।
- 9 जैव सुरक्षा स्तर-III की प्रयोगशालाएं।

स्वास्थ्य क्षेत्र की वर्तमान स्थिति :

- वर्ष 2020 में कोविड-19 के लगभग 11 मिलियन मामले और एक लाख से अधिक संक्रमित लोगों को अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता के कारण भारतीय स्वास्थ्य तंत्र को काफी दबाव का सामना करना पड़ा।
- वर्तमान में भारत में 1145 लोगों पर केवल एक चिकित्सक उपलब्ध है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अनुशंसित दर (1000:1) से काफी कम है।
- भारत ने वित्त वर्ष 2020-21 में अपने सकल घरेलू उत्पाद का 1.8% स्वास्थ्य क्षेत्र पर खर्च किया और पूर्व के वर्षों में यह अनुपात 1-1.5% था।
- भारत में स्वास्थ्य क्षेत्र हेतु किया जाने वाला वित्तीय आबंटन 'आर्थिक सहयोग और विकास संगठन' (आर्गनाइजेशन ऑफ इकनामिक को-ऑपरेशन एंड डेवलपमेंट-ओईसीडी) देशों के औसत (7.6%) और ब्रिक्स (बीआरआईसीएस) देशों द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र पर औसत खर्च (3.6%) की तुलना में काफी कम है।
- परिणामस्वरूप, भारत स्वास्थ्य से जुड़े 'अतिरिक्त व्यय' यानी 'आउट ऑफ पॉकेट एक्सपेंडिचर' (ऐसे खर्च जो सीधे एक रोगी द्वारा वहन किए जाते हैं और जहाँ बीमा पूरी स्वास्थ्य सेवाओं की लागत को प्रावरित नहीं करता है) के मामले में विश्व के शीर्ष देशों में शामिल है। अनुमानों के अनुसार, भारत में स्वास्थ्य सेवा पर होने वाला 'अतिरिक्त व्यय' (आउट ऑफ पॉकेट एक्सपेंडिचर) लगभग 62% के करीब है, जो वैश्विक औसत (18%) का लगभग तीन गुना है।

स्वास्थ्य बजट 2020-21:

बजट 2021-22 में स्वास्थ्य और कल्याण पर ₹2,23,846 करोड़ के परिव्यय की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। यह पिछले वर्ष के बजट अनुमान (₹94,452 करोड़) से 137% अधिक है। इसके तहत पेयजल और स्वच्छता पर ₹60,030 करोड़ का परिव्यय, पोषण पर ₹2,700 करोड़ का परिव्यय, वित्त आयोग अनुदान के रूप में लगभग ₹49,000 करोड़ और टीकाकरण के लिये ₹35,000 करोड़ का परिव्यय शामिल है। केंद्रीय बजट के तहत प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर स्वस्थ भारत योजना

(पीएमएनएसबीवाई) को प्रारंभ करने की घोषणा भी की गई। इसके तहत, स्थानीय सरकारी निकायों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य प्रणाली को मज़बूत करने के लिये ₹13,192 करोड़ के वित्त आयोग अनुदान के साथ-साथ स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों के विस्तार पर ज़ोर दिया गया है।

संबंधित मुद्दे :

□ बजट आबंटन में कमी :

केंद्रीय बजट 2021-22 में केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय को ₹71,268.77 करोड़ आबंटित किये गए हैं। हालाँकि पिछले वर्ष इसके लिये संशोधित अनुमान ₹78,866 करोड़ था। इसका अर्थ है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के बजट आबंटन में लगभग 10% की कमी आई है।

टीकाकरण के लिये आबंटन :

- स्वास्थ्य परिव्यय के अलावा, वित्तीय वर्ष 2021-22 में कोविड-19 टीकाकरण के लिये ₹35,000 करोड़ आबंटित किये गए हैं।
 - ऐसे में टीकों की सबसे सस्ती कीमत को आधार मानते हुए भी हमारे देश में इस राशि से केवल 65% आबादी का ही टीकाकरण संभव हो पाएगा।
 - इसके अतिरिक्त, कोविड वैक्सिन के लिये दिये जाने वाले अनुदान से संपूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली पूरी तरह से मज़बूत नहीं होगी।

□ स्वास्थ्य, जल और स्वच्छता क्षेत्र का साझाकरण :

हालिया बजट में जल और स्वच्छता के लिये वित्तीय आबंटन बढ़ा है, जबकि पोषण के लिये आबंटन में 27% की कमी आई है। स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता और पोषण को एक साथ जोड़कर देखा जाए तो स्वास्थ्य सेवाओं के आबंटन में 137% की वृद्धि हुई है, जबकि वास्तव में स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण के वित्तीय आबंटन में गिरावट दर्ज की गई है।

- चिकित्सा उपकरणों पर आयात शुल्क में कमी इस बजट में शामिल न किये गए महत्वपूर्ण पहलु में से एक है, जो कि नागरिकों के लिये स्वास्थ्य सेवाओं की लागत को कम करने में सहायक हो सकता था।

भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रयास :

कोविड महामारी के पुनरुत्थान के कारण उत्पन्न व्यवधानों को दूर करने के लिए, भारतीय रिज़र्व बैंक ने दिनांक 05.05.2021 के बयान में कई उपायों की घोषणा की है – जैसे –

- आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुंच के लिए ₹50,000 करोड़ की टर्म लिक्विडिटी सुविधा (कोविड लोन बुक);
- व्यक्तियों, छोटे व्यवसायों और एमएसएमई की कोविड संबंधित तनावग्रस्त आस्तियों के लिए समाधान फ्रेमवर्क 2.0;
- कार्यशील पूंजी सीमा आदि का पुनर्मूल्यांकन।

ऑन-टैप मीयादी चलनिधि सुविधा (टर्म लिक्विडिटी सुविधा) :

देश में कोविड से संबंधित स्वास्थ्य सुविधाओं और सेवाओं में तेज़ी लाने के लिए तत्काल चलनिधि के प्रावधान को बढ़ावा देने हेतु, रेपो दर पर तीन वर्ष तक की अवधि के साथ ₹50,000 करोड़ की ऑन-टैप चलनिधि विंडो को 31 मार्च, 2022 तक खोला जा सकता है। इस योजना के तहत, बैंक, वैक्सिन उत्पादकों और प्राथमिक चिकित्सा उपकरणों के आयातकों/आपूर्तिकर्ताओं, अस्पताल / औषधालय, पैथोलॉजी लैब और निदान केंद्र, ऑक्सीजन और वेंटिलेटर के निर्माणकर्ताओं और आपूर्तिकर्ताओं, टीके और कोविड संबंधित दवाओं के आयातकों, लॉजिस्टिक फर्म और रोगियों के इलाज सहित कई प्रकार की संस्थाओं को नई ऋण सहायता प्रदान की जा सकती है।

1. बैंकों को 31 मार्च, 2022 तक इस तरह के ऋण देने के लिए प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र वर्गीकरण में विस्तार के माध्यम से इस योजना के तहत ऋण के त्वरित वितरण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
2. इन ऋणों को चुकौती या परिपक्वता, जो भी पहले हो, तक प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र के तहत वर्गीकृत किया जाएगा।

3. बैंक इन ऋणों को, उधारकर्ताओं को सीधे या रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित मध्यस्थ वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से वितरित कर सकते हैं।
4. योजना के तहत, बैंकों से एक कोविड ऋण बही बनाने की उम्मीद की जा रही है।
5. अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में, ऐसे बैंक प्रतिवर्ती /रिवर्स रेपो विंडो के तहत रिज़र्व बैंक के पास कोविड ऋण बही के आकार तक अपनी अधिशेष चलनिधि को रखने के पात्र होंगे, जिसकी दर, रेपो दर से 25 बीपीएस कम होगी।
6. ऐसे बैंक जो रिज़र्व बैंक से निधि प्राप्त किए बिना उल्लिखित निर्दिष्ट क्षेत्र को ऋण देने की योजना के तहत अपने स्वयं के संसाधनों को लगाने के इच्छुक हैं, वे भी उक्त पैरा 2 और 3 में निर्धारित प्रोत्साहन-राशि हेतु पात्र होंगे।

कोविड ऋण पुस्तिका :

बैंकों से अपेक्षा है कि वे भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशानिर्देशों के तहत एक कोविड ऋण पुस्तिका बनाएं।

तदनुसार, टीके निर्माताओं, अस्पतालों/औषधालयों, पैथोलॉजी लैब, ऑक्सीजन के निर्माताओं और आपूर्तिकर्ताओं, वैक्सीन के आयातकों और कोविड से संबंधित औषधि लॉजिस्टिक फर्म और रोगियों को उपचार के लिए नई ऋण सहायता प्रदान करने के लिए 3 निम्नलिखित उत्पाद तैयार किए गए हैं जो निम्नानुसार हैं :

1. ईसीजीएलएस के तहत ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित करने के लिए हेल्थकेयर कारोबार ऋण, ऑक्सीजन संयंत्र की स्थापना के लिए अस्पताल, नर्सिंग होम के लिए 7.5% की दर से ₹2 करोड़ तक की ऋण-सीमा, ईसीजीएलएस 4.0 के तहत एनसीजीटीसी के 100% गारंटी प्रावरण द्वारा समर्थित।
2. स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे की स्थापना/विस्तार और स्वास्थ्य उत्पादों के निर्माताओं के लिए, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के लिए ₹100 करोड़ तक के व्यावसायिक ऋण।
3. कोविड के इलाज के लिए वेतनभोगी, गैर-वेतनभोगी और पेंशनभोगियों के लिए व्यक्तियों को ₹25000 से ₹5 लाख तक का बेज़मानती व्यक्तिगत ऋण।

उपरोक्त सभी योजना के तहत, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा ऋण, रियायती ब्याज दर पर दी जा रही है और यह कोविड ऋण पुस्तिका का हिस्सा बनेंगी।

कोविड ऋण बही के अंतर्गत कुछ बैंकों की एमएसएमई/गैर-एमएसएमई क्षेत्र के वित्तपोषण के लिए ऋण योजनाएं निम्नानुसार हैं:-

केनरा बैंक की ऋण योजना:

‘केनरा जीवनरेखा’ :

हेल्थकेयर बिजनेस लोन: यह योजना देश में मेडिकल ऑक्सीजन और ऑक्सीजन सिलेंडरों के निर्माण और आपूर्ति में तेज़ी लाने के लिए तत्काल तरलता की सुविधा प्रदान करेगी। इस योजना की मुख्य बातें निम्नानुसार हैं :

ऋण-मात्रा : ₹2 करोड़ से ₹5 करोड़ तक की
 ऋण-प्रमात्रा।

सुविधा का प्रकार : सावधि ऋण और गैर-निधि (साख पत्र) ।

ऋण की अवधि : 6 महीने की अधिकतम अधिस्थगन अवधि सहित अधिकतम 5 वर्ष की अवधि।

प्राथमिक प्रतिभूति : ऋण की आय से सृजित आस्तियों का दृष्टिबंधक/बंधक

योजना की वैधता : 31.03.2022

‘केनरा चिकित्सा’ – स्वास्थ्य देखभाल ऋण सुविधा:

यह योजना देश में कोविड से संबंधित स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचे और सेवा को बढ़ाने के लिए तत्काल तरलता की सुविधा प्रदान करेगी। इसके अंतर्गत –

ऋण-प्रमाण : ₹10 लाख से ऊपर और अधिकतम ₹50 करोड़।

सुविधा का प्रकार : मानदंडों के अनुसार सावधि ऋण, नकद ऋण, साख का आयात पत्र, बैंक गारंटी, आदि।

प्राथमिक प्रतिभूति : ऋण की आय से सृजित आस्तियों का दृष्टिबंधक/बंधक

योजना की वैधता : 31.03.2022

एनसीजीटीसी द्वारा संचालन दिशानिर्देश :

- विस्तारित ईसीएलजीएस उपायों को लागू करना।
- स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए और व्यक्तियों को कोविड उपचार के संबंध में किए गए खर्च की पूर्ति के लिए व्यावसायिक संस्थाओं को ऋण-उत्पाद उपलब्ध कराना।
- भारतीय रिज़र्व बैंक के संकल्प ढांचे 2.0 के निर्बाध कार्यान्वयन के लिए पद्धति और प्रक्रिया स्थापित करना।

समाधान फ्रेमवर्क 2.0 :

समाधान फ्रेमवर्क 2.0 के संबंध में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने ऋणों की पुनर्संरचना के लिए नमूना दृष्टिकोण –पत्र तैयार किया है।

- ₹10 लाख तक : कुछ छोटे व्यवसायों और एमएसएमई के लिए मानकीकृत पुनर्गठन प्रस्ताव।
- ₹10 लाख से अधिक और ₹10 करोड़ तक।
- ₹10 करोड़ से अधिक।

निष्कर्ष :

पिछले कुछ वर्षों में सरकार की कार्यसूची में स्वास्थ्य-क्षेत्र का प्रमुख स्थान रहा है। कोविड-19 महामारी के बीच इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है। हालाँकि इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है, परंतु केंद्रीय बजट 2021-22 ने कोविड-19 दौर के बाद स्वास्थ्य क्षेत्र में तरलता बढ़ाने और सतत विकास लक्ष्य संबंधी एजेंडा के तहत वर्ष 2030 तक सार्वभौमिक तौर पर स्वास्थ्य प्रावरण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये एक मज़बूत नींव रखी है। सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा मिलकर उठाये गये उपरोक्त कदम से, इस क्षेत्र के सभी उधारकर्ताओं के पुनरुत्थान में मदद मिलेगी। स्वास्थ्य-सेवा-क्षेत्र के सभी घटकों एवं हिताधिकारियों को आसान वित्तपोषण उपलब्ध होने से आने वाले समय में देश की स्वास्थ्य-संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आयेगा।



आत्मनिर्भर भारत : अवसर, चुनौतियाँ एवं सफलता

आलेख

दि संबर् 2019 से ही समस्त विश्व कोरोना वायरस के नाम से परिचित हुआ एवं समस्त विश्व विपरीत परिस्थितियों से गुजर रहा है। यह कोविड19 के नाम से जाना जाता है जिसके कारण सभी देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा सी गई है। विभिन्न देशों में प्रति व्यक्ति आय, बेरोज़गारी, घटती विकास दर अपने निम्न स्तर पर लुढ़कता जा रहा है।

इस विकट समस्या से देश को उबारने के लिए प्रधानमंत्री जी द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान की शुरुआत 12 मई 2020 को की गई। इस योजना के तहत ₹20 लाख करोड़ के विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की जो कि भारत के जीडीपी के 10% के बराबर है। प्रधानमंत्री ने भारत में कोविड19 महामारी से लड़ने के लिए यह योजना शुरू की। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए कोविड19 की इस आपदा को अवसर में बदलने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि जिन सामानों का आयात देश में खपत की पूर्ति करने के लिए किया जाता है, उनका निर्माण देश में ही सुनिश्चित करने के लिए हमें कदम उठाने होंगे। इसके तहत कड़े निर्णय लेते हुए साहसिक निवेश करके देश को कोविड19 महामारी की समस्या से छुटकारा दिलाकर नई ऊंचाइयों की ओर ले जाना है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा के प्रथम चरण में वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित करके इन क्षेत्रों में रोजगारी के अवसर को बढ़ावा दिया जाएगा। द्वितीय चरण में रत्न एवं आभूषण, फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

सरकार ने इस महामारी में भी अर्थव्यवस्था को पटरी पर



लाने के लिए 10 क्षेत्रों की पहचान की है जिसमें घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया जाएगा। सरकार ने इन क्षेत्रों के आयात में भी कमी लाने का निर्णय लिया है। इनमें फुटवियर, एयर कंडीशनर, फर्नीचर, पूंजीगत सामान, मशीनरी,



गुलशन पवार
एकल खिडकी परिचालक
क्षेत्रीय कार्यालय, भटिंडा

मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, रत्नाभूषण, फार्मा, कपड़ा बाज़ार शामिल है। प्रधानमंत्री ने इस विकट समय में भी देश की जनता को इसमें अवसर पैदा करने के लिए प्रेरित किया। आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करने के लिए पाँच प्रमुख स्तम्भ जिनमें सरकार द्वारा घोषित आर्थिक पैकेज के माध्यम से सुधार करने की घोषणा की गई। ये पाँच स्तम्भ हैं :-

1. अर्थव्यवस्था
2. अवसंरचना
3. प्रौद्योगिकी
4. गतिशील जनसांख्यिकी
5. मांग

महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की अवधारणा को साकार करने की दिशा में प्रधानमंत्री ने 'वोकल फॉर लोकल' का नारा भी दिया था, जिसका उद्देश्य लोगों को लोकल उत्पाद खरीदने एवं उनका प्रचार करने का आह्वान करना था। आत्मनिर्भर भारत अभियान से जुड़कर अपने हस्तनिर्मित, सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़े लाखों लोगों का सामान अपनाने से रोजगार मजबूत होगा। इससे देश में औद्योगिक विकास के स्वरूप और कंपनियों/उद्योगों की कार्यशैली में बड़े बदलाव होंगे। ऐसे में कृषि और अन्य क्षेत्रों को इन परिवर्तनों के अनुसार व्यवस्थित/तैयार कर औद्योगिक विकास के

साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं निम्न/मध्यम स्तर के लोगों पर ध्यान दिया जा सकता है जैसे विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों की पैकेजिंग या उनसे बनने वाले अन्य उत्पादों के निर्माण हेतु स्थानीय स्तर पर छोटी ओद्योगिक इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा देकर इस श्रेणी के उत्पादन में ग्रामीण क्षेत्रों एवं निम्न/मध्यम स्तर के लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित की जा सकती है।

इस योजना के तहत किए गए प्रयासों से आर्थिक सुधारों के दीर्घकालिक उपाय ज्यादा हैं एवं तात्कालिक राहत कम हैं क्योंकि इस समय तात्कालिक राहत की अधिक आवश्यकता है क्योंकि कई लोग जो प्रतिदिन कमाई करके ही गुज़ारा करते हैं, लॉकडाउन के कारण उनकी आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय सी हो गयी है।

अधिक निर्धारित बजट से अतिरिक्त खर्च होगा या अलग-अलग योजना के द्वारा बजट में कटौती कर इसे व्यवस्थित किया जाएगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौर में अन्य देशों की हलचल का भारत के बाज़ारों पर सीधा असर होगा। स्थानीय उद्यमियों को सुरक्षा राशि देने से संभवतः विश्व व्यापार संगठन के सदस्यों के साथ टकराव हो सकता है।

भारत के बुनियादी ढांचे का विकसित न होना आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज भारत की जीडीपी का 10% है, जिससे राजकोषीय घाटे में लगातार वृद्धि हो रही है जो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए उचित नहीं है। भारत में हर महीने 5 अरब डॉलर का इलेक्ट्रॉनिक आयात होता है जिसका 43% हिस्सा अकेले चीन का है। इसलिए भारत के आयात में सबसे ज्यादा हिस्सेदारी रखने वाले 15 क्षेत्र का घरेलू उत्पादन बढ़ाना होगा, जो अतिमहत्वपूर्ण एवं जटिल कार्य है।

एमएसएमई क्षेत्र जो इस योजना की सफलता के लिए अति महत्वपूर्ण है, उसको सुदृढ़ ढंग से क्रियान्वयन करना आवश्यक है।

श्रम कानून में सुधार भारत में निवेश प्रक्रिया को जटिल से सरल करना, भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने की चुनौती।

आत्मनिर्भर भारत योजना ने भारत को कोविड-19 वायरस से उबरने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और सफलता प्राप्त की। इसने भारत की आर्थिक स्थिति को सुधारा है जिससे देश की अर्थव्यवस्था पहले जैसे हो रही है। अप्रैल-मई 2020 में देश में पीपीई किट की

कमी होने लगी थी, परंतु इस योजना के अथक प्रयास के कारण भारत अब प्रतिदिन 2 लाख पीपीई किट का निर्माण करने लगा है। इतना ही नहीं पीपीई किट का निर्यात भी करना शुरू कर दिया है। भारत की जीडीपी जो जून तिमाही 2020 में -7.9% थी, अब आईएमएफ़ के अनुसार 2021-22 में 12.5% (सकारात्मक) होने का अनुमान लगाया है। यह नकारात्मक से सकारात्मक की ओर जाने वाली आर्थिक विकास दर, आत्मनिर्भर भारत के परिणामस्वरूप है।



इक्कीसवीं सदी के सभी स्वप्न को पूरा करने की कोशिश में प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। विभिन्न स्तर पर स्वदेशी रोज़गार होने के कारण मांग एवं पूर्ति की श्रृंखला को बढ़ाने की कोशिश की जा रही है जिससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। राज्यों, छोटे क्षेत्रों में स्थापित जो छोटी कंपनियाँ हैं, वे क्षेत्रीय लोगों को रोज़गार उपलब्ध करा रही हैं, ऐसी कंपनियों को आवश्यक निवेश उपलब्ध कराया गया। जिससे इस प्रकार के उद्योगों को बढ़ावा मिला। ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त रोज़गार सृजित करने के लिए मनरेगा को अतिरिक्त ₹40000 करोड़ आबंटित किए गए जिससे गांव में रोज़गार को बढ़ावा मिला।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं है बल्कि, इसका उद्देश्य दुनिया से जुड़े रहते हुए आर्थिक विकास के साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करना है। इस अभियान के माध्यम से नागरिकों का सशक्तिकरण किया जा रहा है और इसका उद्देश्य नागरिकों को हर तरह से आत्मनिर्भर बनाना है।



“ताकत कभी शारीरिक क्षमता से नहीं आती।
 ताकत हमेशा आपकी
 अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।”

– महात्मा गांधी

किरसा कहानी का

आलेख

का का! फिर क्या हुआ? जैसे वाक्यों के रूप में कहानी का इतिहास मानव की जिज्ञासा और कुतूहल वृत्ति के साथ जुड़ा हुआ है और यह मालूम नहीं है कि कितना पुराना है।

कहानी लेखन के दो पक्ष हैं : मनुष्य और समाज मनुष्य के भाव, मनोविचार और बौद्धिक परिपक्वता के साथ कहानी के विषय और उसके स्वरूप के प्रति उसकी रुचि में परिवर्तन होता रहता है। समाज भी अपने विकास स्तर के अनुसार होने वाले कालक्रमिक परिवर्तनों और घटनाओं द्वारा कहानी के स्वरूप में परिवर्तन करता रहता है। भारतवर्ष में किस्से-कहानी का इतिहास सदियों पुराना है। महापुरुषों, वीरपुरुषों तथा राजाओं के शौर्य, प्रेम, न्याय, ज्ञान, वैराग्य, साहस आदि की कथाएँ जनश्रुति में किस्से के रूप प्रचलित थी। लोग ये किस्से पीढ़ी दर पीढ़ी अनुश्रुतियों के रूप में ग्रहण करते आ रहे थे। लेखन कला के विकास के साथ इन किस्सों का लिपिबद्ध होने से कहानी के स्वरूप में प्रौढ़ता पाई और धीरे-धीरे कहानी साहित्य की एक प्रमुख कथात्मक विधा के रूप में विकसित हुई।

संस्कृत साहित्य में कहानी को गल्प या आख्यायिका कहा गया है। भारतीय साहित्य में गुणाढ्य की 'वृहत्कथा' को सबसे प्राचीन आख्यायिका माना गया है। यद्यपि यह अनुपलब्ध है, परंतु इसका छिटपुट स्वरूप आचार्य बुधस्वामी के 'वृहत्कथाश्लोकसंग्रह', आचार्य क्षेमेन्द्र कृत 'वृहत्कथामंजरी' और आचार्य सोमदेव के 'कथासरित्सागर' में प्राप्त होता है। आचार्य दण्डी ने इन रचनाओं के लिए 'कथा' शब्द का प्रयोग किया है, इससे यह अनुमान लगता है कि संभवतः ये रचनाएं गद्य में होंगी। यह भी संभव है कि ये कहानियां प्राकृत में लिपिबद्ध की गई हों। जो भी हो, संस्कृत साहित्य में इन कहानियों का आधार धार्मिक आचार, आध्यात्मिक तत्त्वचिंतन, नीति और कर्तव्य शिक्षा देना था। वाणभट्ट की 'कादम्बरी', सुबन्धु की 'वासवदत्ता', धनपाल की 'तिलकमंजरी' और दण्डी के 'दशकुमारचरित' पर वृहत्कथा का प्रभाव परिलक्षित होता है।

कालांतर में नैतिक व राजनैतिक शिक्षा के उद्देश्य से कथात्मक विधा में नीति कथाओं को भी शामिल कर लिया गया, जिनमें पशु-पक्षियों, वृक्षों आदि को चित्रित करते हुए मनोरंजन और कौतूहल प्रधान कहानियां लिखी गईं। यही वह समय था जब पश्चिम में भी 'अरेबियन नाइट्स' जैसे कथात्मक ग्रंथ लिखे गए। भारत में



मयंक पाठक
 प्रबंधक (राजभाषा)
 अंचल कार्यालय, लखनऊ

'पंचतंत्र' इसी शैली का एक उदाहरण है। अवदान साहित्य और जातक कथाओं पर भी इसी शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है।

हिंदी गद्य साहित्य में मनुष्य और समाज के सूक्ष्म फलकों को समाहित करने वाले कथा साहित्य का संपूर्ण विकास आधुनिक युग की कहानी में दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक कहानी के स्वरूप पर विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से विचार किया। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कथाकार मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में – "कहानी एक ऐसा उद्यान नहीं जिसमें भांति-भांति के फूल और बेलें सजी हुई हैं, बल्कि यह एक ऐसा बगीचा है जिसमें एक ही गमले का माधुर्य (सौरभ) अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।" कहानी की समस्त विशेषताओं का समन्वय करते हुए बाबू गुलाबराय कहते हैं – "कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है जिसमें एक दिन या एक प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केंद्रित घटना या घटनाओं का आवश्यक परंतु कुछ-कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान-पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहलपूर्ण वर्णन हो।"

कहानी हमारे जीवन का एक खंड चित्र होती है। उसका वही महत्व है जो जीवन का महत्व है। कहानी एक निश्चित लक्ष्य को लेकर चलती है। इस प्रकार कहानी उपन्यास से भिन्न एक नई एवं निश्चित शैली को बनाने में समर्थ हुई है। भौतिक युग में विज्ञान की प्रधानता के कारण कहानी जीवन के यथार्थ को अधिक प्रभावशाली रूप में चित्रित करने का माध्यम बन रही है। आज के व्यस्त जीवन में समयाभाव के कारण छोटी कहानी का महत्व कई गुना अधिक हो गया

है, क्योंकि वह अल्प काल में ही पाठक की जिज्ञासु पिपासा को शांत करने एवं उसका मनोरंजन करने में समर्थ हो जाती है। आधुनिक कहानी के लघु कलेवर का आधार जीवन के किसी अंग, मनोवैज्ञानिक सत्य या जीवन के यथार्थ स्वभाव का चित्रण करना बन गया है। कहानी की एक विशेषता यह भी है कि कहानी में एक तत्व, एक संवेदना, एकार्थी प्रेरणा, एक प्रयोजन, एक स्वरूप तथा एक प्रकार की सर्वत्र मनोहरता बनी रहती है।

आइए, पहले हिंदी कहानी के आवश्यक तत्वों पर एक दृष्टि डालते हैं।

कथावस्तु :

कथावस्तु कहानी का प्राण है। इसके अभाव में कहानी हो ही नहीं सकती। कथावस्तु यथासंभव संक्षिप्त होनी चाहिए, परंतु फिर भी उसके वर्ण्य विषय तथा कहानीकार की मूल संवेदना के अनुरूप उसका आकार छोटा या बड़ा हो सकता है। कथावस्तु ऐसी हो जिसके प्रति पाठक की उत्सुकता निरंतर बनी रहे। कथावस्तु पांच अवस्थाओं से होकर गुजरती है। **आरंभ:** यह रोचक होना चाहिए, **आरोह :** इसमें प्रमुख पात्र की मानसिक स्थिति का विकास दिखाया जाता है, **चरम स्थिति :** इस स्थिति में कहानी की रोचकता में क्षण भर के लिए स्तब्धता आ जाती है। पाठक सोचने लगता है कि ना मालूम अब क्या होगा ? **अवरोह :** आगे क्या हुआ, अथवा चरम स्थिति का समाधान ही अवरोह है। **अंत या उपसंहार :** इसमें कहानी का परिणाम निहित रहता है। इस स्थिति में कुछ कहानीकार संपूर्ण रहस्य का उद्घाटन कर देते हैं और कुछ परिणाम को अस्पष्ट रखकर पाठकों को मनन की सामग्री दे देते हैं।

पात्र एवं चरित्र चित्रण :

कहानी का महत्वपूर्ण अंग है और इसकी सफलता लेखक के अनुभव, अध्ययन और मनोवैज्ञानिक पकड़ जैसे गुणों पर निर्भर रहती है। चरित्र-चित्रण या पात्र विश्लेषण वर्णन, संकेतशः और वार्तालाप सहित घटनाओं द्वारा किया जाता है। कहानी का आकार सीमित होने के कारण चरित्र-चित्रण करते समय चरित्र के उस पक्ष पर बल दिया जाता है जो कहानी की मूल संवेदना से संबद्ध होता है।

कथोपकथन :

कथोपकथन (वार्तालाप) द्वारा पात्रों के चरित्र-चित्रण तथा कथावस्तु का विकास होता है। प्रभावशाली एवं संक्षिप्त वार्तालाप से जहां एक ओर कहानी में रोचकता एवं सजीवता का समावेश होता है, वहीं दूसरी ओर नाटकीयता के सृजन में सहायता मिलती है।



आधुनिक काल में भी ऐसी अनेक कहानियां लिखी गई हैं जिनमें कथोपकथन का अभाव है।

देश काल तथा वातावरण :

कहानी के पात्रों की मानसिक स्थिति को सूक्ष्म और संवेदनशील बनाने के लिए यह तत्व आवश्यक होता है। इसी तत्व से घटनाओं की सुसंगतता द्वारा पाठक साधारणीकरण कर पाता है। यह पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुरूप होना चाहिए और इसका निरूपण बहुत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। भाव प्रधान कहानियों में प्रकृति के सजीव एवं संवेदनशील चित्रण द्वारा वातावरण की सृष्टि की जाती है।

भाषा शैली :

शैली का संबंध कहानी के समस्त तत्वों के साथ रहता है। शैली सरल, सुबोध, सरस, प्रभावपूर्ण और धारावाहिक या क्रमबद्ध होनी चाहिए। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग, यथास्थान स्थानीय शब्दों का समावेश शैली को सजीवता व शक्तिमत्ता प्रदान करता है। आम तौर पर पाया गया है कि भाषा प्रयोग में कहानीकारों ने तत्सम शब्दावली, सामान्य बोलचाल की स्वाभाविक भाषा, लाक्षणिक फड़कीली शैलीयुक्त भाषा का प्रयोग किया है। यह ध्यान रखना चाहिए कि कहानी में प्रयुक्त भाषा गहन से गहन भावों को मूर्त रूप देने में समर्थ हो।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य केवल पाठकों का मनोरंजन नहीं होना चाहिए, अपितु इसके साथ और इससे बढ़कर यथार्थ के सुरुचिपूर्ण वर्णन द्वारा उच्च आदर्श संबंधी संदेश प्रदान कर पाठक के मन में

जीवन के प्रति आस्था उत्पन्न होनी चाहिए। इसलिए कहानी किसी लक्ष्य विशेष को लेकर चलती है और पाठक को वहां तक पहुंचा देती है।

हिंदी गद्य के चार प्राचीन लेखकों यथा – इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी', पंडित सदल मिश्र की 'नासिकेतोपाख्यान', सदासुखलाल की 'सुखसागर' एवं लल्लूलाल की 'प्रेमसागर' पुस्तकों में कहानी या उपाख्यान शब्द का कहीं न कहीं प्रयोग किया गया है। इस आधार पर यह मानने में कोई अनौचित्य नहीं है कि हिंदी गद्य का आरंभ भी कहानी से ही हुआ।

हिंदी कहानी पर अंग्रेजी और बांग्ला भाषा का व्यापक प्रभाव रहा है। हिंदी में मौलिक कहानी लाने का श्रेय सरस्वती पत्रिका को है। इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी कहानी कला के आरंभ एवं विकास के प्रयत्न और प्रयोग हुए हैं। सरस्वती के प्रथम अंक में किशोरी लाल गोस्वामी जी की कहानी 'इंदुमती' प्रकाशित हुई। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सन् 1900 में प्रकाशित 'इंदुमती' को हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी माना है। इसी समय भगवान दास की 'प्लेग की चुड़ैल', बंग महिला की कहानी 'दुलाई वाली', पंडित रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा गिरिजा दत्त बाजपेई की कहानी 'पंडित और पंडिताइन' प्रकाशित हुई। परंतु मार्मिकता की दृष्टि से 'इंदुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाई वाली' हिंदी की पहली मौलिक और साहित्य कोटि की कहानियां मानी जा सकती हैं। इनमें कल्पना और यथार्थ का मिश्रित रूप मिलता है। रचनाकाल की दृष्टि से भी किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी इंदुमती को हिंदी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी माना गया है।

द्विवेदी युग के द्वितीय चरण तक वस्तुतः हिंदी कहानी का प्रयोग काल था। उसके बाद हिंदी कहानी की क्रमबद्ध प्रगति हुई। हिंदी कहानी की प्रगति के इतिहास को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं।

जयशंकर प्रसाद युग :

सन 1911 में हिंदू पत्रिका में जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। प्रसाद जी की कहानियों में कहानी के तत्वों का अपूर्व निर्वाह था। कौतूहल और भावुकता की प्रधानता के साथ पात्रों के अंतर्द्वंद्व और भावानुकूल प्रकृति का चित्रण प्रसाद जी की कहानियों की विशेषता है। प्रसाद जी का व्यक्तित्व हिंदी साहित्य में बहुमुखी आयाम लेकर आया था। उन्होंने हिंदी साहित्य की जिस विधा को भी छुआ उसे अपने स्पर्श रूपी पारस पत्थर से लोहे को

सोना बना दिया। इसी समय विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक जी हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध कहानी 'ताई' व 1915 में पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' प्रकाशित हुई।

मुंशी प्रेमचंद्र युग :

प्रसाद युग के अंतिम चरण में प्रेमचंद्र ने प्रवेश किया। प्रेमचंद्र जी की कहानियों में अद्भुत सामाजिक चेतना थी। इन्होंने कहानी की सामाजिक उपयोगिता को समझा और जीवन के संघर्षों को प्रकट करने के माध्यम के रूप में उसका उपयोग किया। उन्होंने कहानी को मात्र मनोरंजन का माध्यम न रहने देकर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बना दिया। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा जन-जीवन को वाणी दी। अपने तीखेपन के कारण उनकी कहानियों ने एक नई हलचल उत्पन्न कर दी और प्रेमचंद्र कहानी क्षेत्र में युग प्रवर्तक के रूप में मान्य हुए। निःसंदेह मुंशी प्रेमचंद्र का आगमन हिंदी कहानी साहित्य की एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। उन्हे उपन्यास सम्राट भी कहा जाता है।

प्रगतिवाद युग :

प्रेमचंद्र के युग में ही मनोविश्लेषण को आधार बनाकर कहानी लिखने वाले कहानीकारों का एक नया वर्ग उभरने लगा था। इस वर्ग में इलाचंद्र जोशी तथा अज्ञेय अग्रगण्य थे। ये लोग प्रेमचंद्र के सामाजिक राजनीतिक प्रभावों से अप्रभावित होने के कारण प्रेमचंद्र की परंपरा की रक्षा करने में असमर्थ रहे। इसी समय समाजवादी विचारधारा को लेकर भी कई कहानीकार उपस्थित हुए। कहानी के क्षेत्र में कुछ महिला लेखिकाएं शिवानी, मन्नू भंडारी आदि भी अपनी लेखनी से चमत्कार दिखा रही थीं। यही युग नई कहानी के रूप में उभरकर सामने आया।

हिंदी के कहानी साहित्य ने पूरी शक्ति के साथ विकास किया है। गद्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इस विधा ने अधिक उत्तरदायित्व का निर्वहन किया है। हमारी नई आर्थिक व्यवस्था के चक्र ने जीवन को झकझोर दिया है। पुराने मूल्य निरर्थकप्राय हो गए हैं। हिंदी की कहानी इन्हीं समस्याओं और जीवन मूल्य संबंधी विषमताओं द्वारा आक्रांत है। आज का लेखक मनुष्य की विषमताओं का मूक और तटस्थ साक्षी नहीं, बल्कि उसका सहभोक्ता और सहयात्री है। इसलिए आज की कहानी संदर्भ सापेक्ष और केवल अनुभव तक सीमित न रहकर अनुभव के अर्थ तक पहुंचती हैं, जहां एक विराट ऐतिहासिक प्रांगण में उपस्थित मनुष्य की सूक्ष्मतम संवेदनाओं का चित्रण करते हुए कहानी समष्टि को समेट लेती है।



देवनागरी लिपि की विशेषता

आलेख

स मूचे विश्व में प्रयुक्त होने वाली लिपियों में देवनागरी लिपि की विशेषता सबसे भिन्न है। उसकी विशेषता यह भी है कि इसमें स्वर – व्यंजन अलग-अलग रखे गए हैं। देवनागरी लिपि अक्षर (syllable) आधारित लिपि है। इसीलिए इसे 'अक्षरात्मक लिपि' कहा जाता है। देवनागरी लिपि का यही गुण उसे संसार की अन्य लिपि से अधिक वैज्ञानिक बनाती है।

किसी भाषा की ध्वनियों व शब्दों को लिखित रूप में की गई प्रस्तुति को लिपि कहा जाता है। लिपि का विभाजन दो भागों में किया जा सकता है :

1. चित्रात्मक लिपि :

जिस लिपि को विशेष चिन्हों द्वारा प्रकट किया जाता है, उस लिपि को चित्रात्मक लिपि कहते हैं। 'चीनी' भाषा इसका उदाहरण है।

2. ध्वन्यात्मक लिपि :

इस लिपि के अंतर्गत शब्दों के लिये विशेष ध्वनि होती है जिसकी वजह से इसको ध्वन्यात्मक लिपि कहते हैं। रोमन लिपि एवं देवनागरी लिपि इसके उदाहरण हैं। देवनागरी लिपि का प्रयोग हिंदी भाषा के लिये किया जाता है जबकि रोमन लिपि का प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा के लिये किया जाता है।

क. देवनागरी लिपि :

देवनागरी एक लिपि है जिसमें कई भारतीय भाषायें तथा कुछ विदेशी भाषायें लिखी जाती हैं। देवनागरी बायें से दायें की ओर लिखी जाती है। इसकी पहचान एक 'क्षैतिज रेखा' यानी 'शिरोरेखा' से होती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खींची होती है। संस्कृत, मराठी, हिंदी, पाली, कश्मीरी, कोंकणी, सिन्धी, गढ़वाली, नेपाली, डोगरी, अंगिका, मगही, बोडो, संथाली, मैथिली और भोजपुरी आदि भाषायें देवनागरी में लिखी जाती हैं। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों



अवनीश कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
खुदरा ऋण केंद्र-2, नोएडा

यथा – रोमन, अरबी, चीनी आदि में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे अधिक वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल अंतर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला (आईपीए) लिपि है। भारत की कई लिपियां देवनागरी से बहुत अधिक मिलती जुलती हैं जैसे – गुजराती, बंगला, गुरुमुखी आदि।

ख. अंतर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला :

आज विभिन्न कंप्यूटर प्रोग्राम की सहायता से भारतीय लिपियों का परस्पर परिवर्तन (लिप्यंतरण) बहुत आसान हो गया है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे हुए पाठ का लगभग हू-ब-हू उच्चारण किया जा सकता है जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपि में सम्भव नहीं है। देवनागरी में कुल 52 अक्षर होते हैं जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। शून्य या एक या अधिक व्यंजनों और एक स्वर के मेल से एक अक्षर बनता है। एक मत के अनुसार देवनागर (काशी) में प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पडा। भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं पर उच्चारण वर्ण-क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं। देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौंदर्य की दृष्टि से सुंदर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है।

देवनागरी शब्द की व्युत्पत्ति :

‘देवनागरी’ या ‘नागरी’ नाम का प्रयोग क्यों प्रारम्भ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्ति किस निमित्त था – यह अब तक पूर्णतः निश्चित नहीं है।

- क. दक्षिण में इसका प्राचीन नाम नदिनागरी था। हो सकता है नदिनागर कोई स्थान सूचक हो और इस लिपि का उससे कुछ संबंध रहा हो।
- ख. नागर अपभ्रंश या गुजराती नागर ब्राह्मणों से उसका संबंध बताया गया है, परंतु दृढ-प्रमाण के अभाव में यह मत संदिग्ध है।
- ग. सांकेतिक चिन्हों या देवताओं की उपासना में प्रयुक्त त्रिकोण, चक्र आदि चिन्हों को देवनागर कहते थे। कालांतर में नाम के प्रथमाक्षरों का उनसे बोध होने लगा और जिस लिपि में उनको स्थान मिला उसे देवनागरी कही गयी।
- घ. यह भी हो सकता है कि नागर जन इसमें लिखा करते थे, अतः नागरी अभिधान पडा और संस्कृत के ग्रंथ भी इसमें लिखे जाने लगे, तब इसे देवनागरी भी कहा गया।
- च. यह भी माना जाता है कि काशी को देवनागर के नाम से पुकारते हैं। देवनागर में इस लिपि का अधिक प्रचलन है, इस प्रचलन के कारण ही इसका नाम देवनागरी पडा हो।

देवनागरी का इतिहास :

758 ई0 के राष्ट्रकूट राजा दंतिदुर्ग का सामगढ़ ताम्रपट मिलता है जिस पर देवनागरी अंकित है। ग्यारहवीं शताब्दी के चोल राजा राजेंद्र के सिक्के मिले हैं जिन पर देवनागरी लिपि अंकित है। प्रतिहार राजा महेंद्रपाल (891-907) का दानपात्र भी देवनागरी लिपि में है। महमूद गज़नवी द्वारा चलाये गये चांदी के सिक्के पर देवनागरी लिपि में संस्कृत अंकित है। मुहम्मद विनसाम (1192-1205) के सिक्कों पर लक्ष्मी की मूर्ति के साथ देवनागरी लिपि का प्रयोग हुआ है। शमशुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1235) के सिक्कों पर भी देवनागरी अंकित है। अकबर के सिक्कों पर देवनागरी में राम-सिया का नाम अंकित है।



सभी जानते हैं कि आज विश्व में हिन्दी का प्रचलन बढ़ रहा है और इसे विश्व की दूसरी सर्वाधिक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में माना जाता है। यह भी एक तथ्य है कि विश्व में हिन्दी जहां गई, अपने साथ अपनी लिपि देवनागरी भी लेती गई। इस प्रकार अब नागरी लिपि विश्व के क्षितिज पर विश्वनागरी के रूप में उभर रही है। देखा जाए तो देवनागरी लिपि भारत की एक पहचान भी है।

जहां तक भारतीय विज्ञापन का प्रश्न है अब विज्ञापन की भाषा भी धीरे-धीरे हिन्दी बन रही है। उसमें अंग्रेज़ी शब्दों का बाहुल्य अवश्य बढ़ा है, किन्तु वह नागरी में ही अंग्रेज़ी शब्दों को स्वीकार करता है, जैसे ‘यह दिल मांगे मोर’ – यहाँ मोर नागरी में ही लिखा जाता है – रोमन में नहीं। हिन्दी के सभी समाचार पत्रों की यही स्थिति है। आज यूरोप और अमेरिका आदि देशों में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास में जो शोधकार्य हो रहा है, उसने भी नागरी लिपि की वैज्ञानिकता के प्रति विशेषज्ञों का ध्यान आकृष्ट किया है।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि देवनागरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस लिपि में जैसे बोला जाता है वैसे ही लिखा जाता है। यह पूरी तरह से परिमार्जित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सटीक लिपि है। कंप्यूटर विज्ञान आज विश्व की दिशा को परिवर्तित करने वाली एक विधा है और कंप्यूटर के विद्वानों द्वारा यह तलाशा जा रहा है कि कंप्यूटर की यदि अपनी सर्वाधिक उपयुक्त भाषा होगी तो यह निश्चित रूप से हिन्दी या संस्कृत होगी जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

‘नए सामान्य’ से ‘नए भविष्य’ तक

आलेख

बैंक किंग एक दृढ़ व्यवसाय है जिसमें कई प्रक्रियाओं और दिशानिर्देशों का पालन करना होता है। दरअसल, ग्राहकों के लिए अनुकूलित और नए उत्पाद बनाना एक मुश्किल काम होता है। कारोबार के मामले में ग्राहकों की ज़रूरतें अब भी पहले जैसी ही हैं। खुदरा ग्राहकों और छोटे व्यवसायों को बैंक खातों और नकदी के उचित प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही उन्हें अपनी संपत्तियों, व्यवसायों के साथ-साथ स्वयं के जोखिमों को प्रावरित करने के लिए बीमा की भी आवश्यकता होती है। इसके अलावा, उन्हें अपनी संपत्ति को अधिक उत्पादक बनाने के लिए निवेश की भी आवश्यकता रहती है।

पहले के दिनों में ग्राहक बैंक जाकर कर्मचारियों के साथ बातचीत कर सकता था और काम करवा सकता था। लेकिन आजकल कर्मचारियों के साथ-साथ ग्राहकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा से समझौता किए बिना बुनियादी खुदरा बैंकिंग कार्यों को जारी रखना मुश्किल हो गया है। जब ऐसी अप्रत्याशित घटनाएं होती हैं, तो लोग विश्वास, सुरक्षा और स्थिरता की भावना प्रदान करने के लिए अपने बैंकों की ओर रुख करते हैं। ऐसे ग्राहकों के लिए बैंकों को कहीं भी, कभी भी और किसी भी उपकरण से उपलब्ध होना आवश्यक हो जाता है। चूंकि, यह विश्वास पर आधारित सेवा है, इसलिए आमने-सामने का संप्रेषण महत्वपूर्ण है। बैंकों के लिए सामाजिक दूरी के बीच व्यक्तिगत संबंध कैसे बनाए रखें, किसी भी उपकरण पर किसी भी समय कैसे उपलब्ध हो और अराजकता के बीच शांति और सुरक्षा की भावना कैसे प्रदान करें, ये आज के दौर की प्रमुख परेशानियाँ हैं।

हालांकि, ग्राहक अब कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन सहायता की तलाश में हैं, तब भी बैंकों की भौतिक उपस्थिति महत्वपूर्ण रहेगी। यहां चुनौती यह है कि ग्राहकों को ऐसी सेवाएं कैसे भी उपलब्ध कराया जाए – चाहे वह टेलीफोन, शाखा या ऑनलाइन के माध्यम से उपलब्ध हों – और जब किसी बैंकिंग सेवा की बात आती है, तो समाधान यह है कि ग्राहकों को सुरक्षित किए जाने का अनुभव कराएं। महामारी ने इस अवधि के दौरान भारतीय बैंकों के लिए अधिकांश डिजिटल पहल को बढ़ावा दिया है। सभी उम्र के



शिखा भंडारी
 प्रबंधक
 उत्कृष्टता केन्द्र, गुरुग्राम

ग्राहकों ने अब डिजिटल बैंकिंग की अवधारणा सीख ली है। यह बहुत कम संभावना है कि उनमें से कई नियमित बैंकिंग के लिए शाखाओं में वापस जाएंगे। इससे पता चलता है कि बैंकिंग हमेशा के लिए बदल गई है और भविष्य डिजिटल बैंकिंग के रूप में है। भविष्य में ग्राहकों से अब तकनीक के जानकार होने की उम्मीद है जो एक सरल और सस्ते मोड में त्वरित सेवा प्राप्त करना चाहेंगे। वे व्यक्तिगत सेवाओं के लिए अधिक उत्सुक होंगे और बैंक को इसे समझने की ज़रूरत है। इसे प्रदान करने के लिए, बैंकों को अपने ग्राहकों को आकर्षित करने में अपनी प्रभावशीलता और दक्षता को बनाए रखना होगा।

भारतीय बैंकों ने अपनी नियमित बैंकिंग प्रणाली में वर्तमान तकनीक को शामिल करने के लिए छोटे-छोटे कदम उठाए हैं। प्रौद्योगिकी के विकास में संपूर्ण बैंकिंग प्रणाली में एक बड़ा विकास हुआ है। ऐसे समय में जब बैंकिंग उद्योग के सामने कई रणनीतिक चुनौतियां हैं, यह प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है कि किस पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। समाधानों में से एक ऑनलाइन या डिजिटल चैनलों के माध्यम से ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवा प्रदान करना है। ऐसा करने के लिए, बैंकों ने ग्राहकों की संतुष्टि को बढ़ावा देने और उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए ऑडियो-विजुअल साधनों की ओर रुख किया है। संकट के समय, ग्राहकों की सुरक्षा और

भौतिक संपर्कों को कम करने के लिए डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन वॉलेट और संपर्क रहित भुगतान अब उपयोग में आ गए हैं।

मौजूदा प्रतिस्पर्धी माहौल में बैंक नए और साथ ही मौजूदा ग्राहकों से व्यवसाय हासिल करने और उसे बनाए रखने के लिए विभिन्न रणनीतियों के साथ आए हैं। बैंकों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं में मुख्य रूप से बड़े पैमाने पर उत्पाद शामिल हैं, कुछ विशेष उत्पादों को छोड़कर, जो व्यक्तिगत बैंकिंग के लिए उच्च निवल मूल्य वाले व्यक्तियों की सेवा के लिए हैं। ग्राहक यह समझने में सक्षम हैं कि इस नई दुनिया में कौन से बैंक सबसे अच्छे तरीके अपना रहे हैं। मौजूदा महामारी के मद्देनजर बैंक भी नई दिशा अपना रहे हैं और उसी के अनुसार अपनी रणनीति बदलने की योजना बना रहे हैं। चूंकि, लोग अब अधिक अप्रत्याशित जीवन जीने के लिए तैयार हैं, बैंकों को उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे कि उनके ग्राहक सुरक्षित महसूस करें और साथ ही शाखाओं में जाने के बारे में कम चिंतित हों और बैंक उन लोगों को निर्बाध बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम हों जो घरों में रहकर बैंकिंग व्यवहार करना पसंद करते हैं।

यदि हमारे बैंक की बात की जाये तो यह भी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बैंकों की तुलना में कुछ अद्भुत बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करता है। यह नवीनतम तकनीक में निवेश कर रहा है और ग्राहकों के लिए कई ऑनलाइन सेवाएं प्रदान करता है: जैसे –

1) मूलभूत सेवाएं:

तत्काल खाता खोलना, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और वर्चुअल वेलकम किट जैसी सेवाएं डिजिटल बैंकिंग पहल का हिस्सा हैं। डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को ऑनलाइन



सुविधा प्रदान करने के लिए बैंक के पास कई मोबाइल ऐप भी हैं।

2) केनरा बैंक की वेबसाइट के माध्यम से केवाईसी अपडेशन:

बैंक मुख्य रूप से मौजूदा खातों में री-केवाईसी के उद्देश्यों से शाखाओं में गए बिना केवाईसी को ऑनलाइन अपडेट करने के लिए एक लिंक लेकर आया है।

3) डोर स्टेप बैंकिंग सेवाएं (डीएसबी):

कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करके पीएसबी के लिए ईएएसई (एन्हांसड एक्सेस एंड सर्विस एक्सीलेंस) सुधार एजेंडा के हिस्से के रूप में यूनिवर्सल कॉमन टच पॉइंट्स के माध्यम से डोरस्टेप बैंकिंग सेवाओं का कार्यान्वयन भी किया गया है।

4) प्रशिक्षण:

बैंक ने प्रशिक्षण में पहल के विभिन्न तरीके अपनाए हैं, जिनमें से कुछ वेबिनार या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आभासी प्रशिक्षण हैं। बैंक कैंडल (CanDLE) (हमारे बैंक के ऑनलाइन शिक्षण मॉड्यूल) के माध्यम से विभिन्न अध्ययन सामग्री प्रदान करता है। सभी कर्मचारियों को इस प्रक्रिया के माध्यम से दैनिक कार्यों में सहायता प्रदान करने की दिशा अपेक्षित सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करता है जहां कर्मचारी प्रश्न उठा सकते हैं और प्रशिक्षक तुरंत समाधान प्रदान कर सकते हैं।

महामारी ने कई लोगों को जीवन का एक नया तरीका यानी डिजिटल तरीका दिखाया है। बैंकों के बिना दुनिया की कल्पना करना



मुश्किल है। इसलिए, बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनने के लिए आवश्यक परिचालन में लचीलेपन और उसमें सुधार के लिए बैंकों को दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जो बैंक इस स्थिति से उभरने का प्रबंधन कर सकते हैं, उन्हें प्रतिस्पर्धियों पर लाभ होगा। एक बात जो बैंकिंग उद्योग को याद रखनी चाहिए, वह यह है कि देश में गोपनीयता और डेटा सुरक्षा अभी भी दाव पर है। इसके लिए एक दीर्घकालिक समाधान भारतीय रिज़र्व बैंक(आरबीआई) द्वारा समृद्ध प्रौद्योगिकियों और डेटा सुरक्षा और गोपनीयता पर नियम तैयार करना हो सकता है।

बैंक ग्राहक धीरे-धीरे न्यूनतम या शून्य मानव जुड़ाव के साथ स्वचालित बैंकिंग सेवाओं के आदी हो रहे हैं। ऑफलाइन और

ऑनलाइन जुड़ाव का तरीका भी आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका है। अन्य सभी उद्योगों की तरह, बैंकिंग को भी नए व्यवसाय संशोधनों को अपनाने की तरफ ध्यान देना चाहिए ताकि विकासशील युग में ऑनलाइन और व्यक्तिगत खरीदारी के बीच का खालीपन भरने की कोशिश की जा सके। हम डिजिटल और भौतिक माध्यम दोनों में, दैनिक कार्यों में वित्तीय सेवाओं का एक सहज समावेश देखने की उम्मीद करते हैं। शाखा बैंकिंग, संगठन के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए बनी रहेगी जबकि डिजिटल बैंकिंग नए परिदृश्य में एक व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा होगी। यह बैंकिंग के नए भविष्य के लिए एक नई शुरुआत होगी।



प्रसन्नता का रहस्य

एक बार चालीस लोगों का एक प्रतिनिधि मंडल एक सेमिनार में वक्ता को सुन रहा था। उस समय वे 'प्रसन्नता' पर बोल रहे थे। तभी अचानक वक्ता चुप हो गए और सभी को एक-एक गुब्बारा देते हुए बोले- "आप सभी अपने गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।" जब सभी ने नाम लिख दिए तो वक्ता ने सभी के गुब्बारे इकट्ठे किए और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से पांच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-टफरी का माहौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पांच मिनट बीत गए लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूँढ पाया। अब वक्ता ने उन्हें धैर्य और शांतिपूर्वक जिस व्यक्ति को जिसके नाम का गुब्बारा मिले, उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर ही हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। वक्ता ने फिर कहा- "बिल्कुल ऐसा ही मनुष्य के जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बेचैनी से घूम रहा है जब कि यह नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहां? प्रसन्नता दूसरे से छीना-झपटी करने में नहीं बल्कि दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए आपको खुद प्रसन्नता मिल जाएगी। ढूँढने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही तो मनुष्य जीवन का महत्व है।" वहां आए प्रतिनिधियों के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

डिजिटल साक्षरता से जूझता बैंकिंग उद्योग

आलेख

व्यक्तियों और समुदायों की डिजिटल प्रौद्योगिकियों को जीवन की परिस्थितियों में सार्थक कार्यों को समझने और उपयोग करने की क्षमता को डिजिटल साक्षरता कहते हैं।

अर्थात् एक व्यक्ति कंप्यूटर चलाने, डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्टफोन, टैबलेट आदि चलाने, ई-मेल भेजने एवं प्राप्त करने, इंटरनेट पर खोज करने, सरकारी सेवाओं का उपयोग करने, डिजिटल भुगतान करने आदि में सक्षम हो।

वर्तमान समय वैश्वीकरण का है, जहां दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक सूचनाओं का आदान-प्रदान मोबाईल स्क्रीन के एक टच से होता है। अत्याधुनिक तकनीकों एवं नवीनतम डिजिटल उपकरणों का उपयोग आज प्रत्येक आयुवर्ग के द्वारा किया जा रहा है। वास्तव में देखा जाए तो डिजिटलीकरण समय की मांग है। देश की आबादी लगभग 130 करोड़ है और इतनी बड़ी आबादी को चंद कार्यालयों के माध्यम से सेवा दे पाना नामुमकिन है। यही कारण है कि भारत सरकार ने भी डिजिटल व्यवस्था को आत्मसात किया है और भारत को विकसित देशों की कतार में शामिल करने के लिए डिजिटल इंडिया की मुहिम का आगाज़ किया है। सरकार अपनी विभिन्न जन हितैषी सेवाओं जैसे - जन्म, मृत्यु, विवाह, आय, जाति संबंधी प्रमाण-पत्र जारी करना, रेल्वे, हवाई जहाज के टिकटों की बुकिंग,



विश्वनाथ प्रसाद साहू
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर

विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि में नामांकन, होटलों में आरक्षण, गैस, बिजली, पानी के बिलों सरकारी नौकरियों के लिए परीक्षाओं का आयोजन आदि ऑनलाइन प्लेटफार्मों द्वारा नागरिकों को उपलब्ध करवा रही है।

भारत सरकार ने डिजिटल साक्षरता के लिए कई अभियान चलाए जैसे - राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन, प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता मिशन आदि। इन अभियानों का उद्देश्य डिजिटल रूप से एक सशक्त समाज की स्थापना करना है।

बदलते वक्त के साथ बैंकों ने भी डिजिटल माध्यमों का हाथ थामा है और विश्व स्तरीय मानदंडों को पूरा करते हुए अपनी उपस्थिति का लोहा मनवाया है। देश के प्रत्येक पात्र नागरिक का किसी न किसी बैंक में एक बुनियादी बचत खाता अवश्य है। भले ही वो राष्ट्रीयकृत बैंक में हो अथवा निजी बैंक में। बैंक, आजादी के बाद से इन 74 वर्षों में कई पड़ाव पार करते हुए अपने स्वरूप को ब्रिक्स और मोटार बैंकिंग से बदलकर 'घर पहुंच सेवा' और 'बैंकिंग एट यूअर फिंगरटिप्स' पर ले आए हैं। आज बैंक की एक शाखा किसी भी व्यक्ति की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में पूर्णतया सक्षम है।

लगभग सभी बैंकों ने अपने ग्राहकों को बेहतर उत्पाद एवं सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्लेटफॉर्म तैयार किए हैं।





इसके तहत मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम कार्ड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, डीमेट खाते आदि उत्पाद एवं सेवाएं आती हैं। ग्राहक भी इन डिजिटल बैंकिंग उत्पादों का भर्सक लाभ उठा रहे हैं और अपना कीमती समय बचाने के साथ-साथ तत्काल बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। बैंकों की कार्यावधि सीमित न होकर 24x7x365 हो गई है। बैंकों के बगैर किसी भी कारोबार की कल्पना कर पाना संभव नहीं है। तत्काल धन अंतरण सेवाओं जैसे – आरटीजीएस और एनईएफटी ने कारोबार के लेनदेन को पर्याय बदल दिए हैं। वास्तव में देखा जाए तो डिजिटलीकरण ने बैंकों को एक खुला मंच दिया है, जहां बैंकें ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करते हुए अपने कारोबार में वृद्धि कर रही हैं। शायद इसी स्थिति को 'विन-विन सिचुएशन' कहा जाता है।

जहां डिजिटल माध्यमों ने एक तरफ बैंकों को अवसर प्रदान किया तो दूसरी तरफ चुनौतियां लेकर भी आई हैं। आए दिन समाचार-पत्र बैंक खातों से ऑनलाइन ठगी के मामलों से पटे पड़े रहते हैं। कहीं किसी अनजान कॉल में अपने को बैंक कर्मचारी बताकर ग्राहक से एटीएम और पिन की जानकारी लेकर ठगी की जाती है तो कहीं मोबाइल संदेश में आकर्षक ऑफर बताते हुए फर्जी लिंक भेजकर या किसी ई-मेल में फिशिंग के ज़रिए ठगी की जाती है। इन ठगी का शिकार केवल कम पढ़े लिखे लोग ही नहीं हुए हैं अपितु ठगों ने नवोन्मेषी तरीकों से पढ़े लिखे प्रतिष्ठित लोगों को भी नहीं बखशा है। गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो इन धोखाधड़ियों का एक ही कारण निकल कर सामने आएगा, वो है ग्राहकों में डिजिटल साक्षरता की कमी।

डिजिटल युग में ग्राहक बैंकिंग उत्पादों एवं सेवाओं का उपयोग तो करते हैं किंतु इनकी छोटी-छोटी बारिकियों पर ध्यान देना जरूरी नहीं समझते। उदाहरणतया ग्राहक मोबाइल बैंकिंग या इंटरनेट बैंकिंग के लिए 'क्या करें' संबंधी दिशानिर्देशों के सहारे फायदे तो समझ लेता है किंतु 'क्या ना करें' को पढ़ना आवश्यक नहीं समझता, जिसमें पासवर्ड की गोपनीयता बनाए रखना, ऑनलाइन बैंकिंग के लेनदेन करते समय सावधानियों का वर्णन होता है। जिसके कारण वह ठगी का शिकार होता है।

बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को ऑनलाइन ठगी से बचाने के लिए उठाए जा रहे कदम:

सभी बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को ऑनलाइन ठगी से बचाने के लिए कई प्रकार से कोशिशें की जा रही हैं:

बैंकों की शाखाओं द्वारा नियमित समयांतराल में शाखा परिसर में अपने अधिकार क्षेत्र में स्थित गांवों एवं कस्बों में ग्राहक जागरूकता अभियान चलाया जाता है, जिसमें ग्राहकों को ऑनलाइन बैंकिंग का प्रयोग करते समय 'क्या करें' और 'क्या न करें' संबंधी दिशानिर्देशों से अवगत कराया जाता है।

इसके अतिरिक्त, ग्राहकों को उनकी सुविधानुसार अपनी भाषाओं में प्रकाशित किए गए पैम्फलेट/बैनरों के माध्यम से भी ऑनलाइन बैंकिंग के समुचित रूप से प्रयोग करने संबंधी सूचना दी जाती है। यह पैम्फलेट/बैनरों को शाखा परिसर में उपयुक्त स्थानों में लगाया जाता है जिससे कि शाखा परिसर में आने वाले ग्राहकों का



ध्यान आकर्षित करे। बैंकों ने अपने ग्राहकों को जागरूक करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों का सहारा लिया है। अब टेलीविजन में समाचार अथवा धारावाहिकों में विराम के दौरान विज्ञापन दिया जा रहा है और ग्राहकों को बताया जा रहा है कि बैंक आपसे आपके खाते के व्यक्तिगत विवरण जैसे – एटीएम पिन अथवा पासवर्ड नहीं मांगती। मोबाइल संदेशों द्वारा इस प्रकार के संदेश भेजे जा रहे हैं।

हम जानते हैं कि सामाजिक मीडिया ने जनमानस में नयी क्रांति का संचार किया है, आज प्रत्येक व्यक्ति के पास स्मार्टफोन है और वो किसी न किसी सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़ा हुआ है।

बैंके भी लोकप्रिय सोसियल मीडिया मंचों पर उपस्थित हैं और इन सामाजिक मीडिया के माध्यमों जैसे – ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि का प्रयोग ग्राहकों को डिजिटल साक्षरता के संबंध में जागरूक करने के लिए कर रही हैं। अंत में यह कहा जा सकता है कि बैंकों ने डिजिटल साक्षरता के प्रति ग्राहकों को जागरूक करने में अपनी महती भूमिका निभाई है। अब बारी ग्राहकों की है कि वे बैंकों में रखे अपनी मेहनत से अर्जित किए गए धन की सुरक्षा के लिए सचेत हो जाएं और डिजिटल बैंकिंग का प्रयोग सावधानीपूर्वक करें।



एक मामूली सा सिपाही हूँ बेशक कोई भगवान नहीं

एक मामूली सा सिपाही हूँ, बेशक कोई भगवान नहीं।
 देश का सैनिक होना इतना भी आसान नहीं।।
 इस दर्जे की खातिर मैंने बचपन को खोया है।
 मैं वो हूँ जो सेना में भर्ती होने की खातिर सिर्फ 4 घंटे ही सोया है।।

सुकून की जिंदगी को कुर्बान करता देश का फौजी।
 कभी चलते-चलते कभी खड़े-खड़े ही सोया है।।
 जाने कितनी होली बीती, जाने कब दिवाली गई।
 जाने कितने रक्षाबंधन मेरी कलाई खाली गई।।

प्रशिक्षण की लडी ने साथ नहीं छोड़ा अब तक।
 जाने कब फौज में आने पर दूर होती कंगाली गई।।
 फिर भी तुम्हें हर वक्त जो खुद दिखे परेशान नहीं।
 इस भारत देश के रक्षक का जीवन इतना भी आसान नहीं।।

फौज की वर्दी की खातिर मैंने सब कुछ छोड़ा।
 असंभव यहां कुछ भी नहीं हमने यहां सब कुछ किया है।।
 मेरा कोई संडे नहीं छुट्टी की गुज़ारिश नहीं।
 सर्दी का कोहरा, पहले वाली बारिश नहीं।।

मेरा परिवार मुझसे बात करने को तरसता है।
 लेकिन कभी पूरी होती उनकी ख्वाहिश नहीं।।
 अपने ऊपर गर्व है मुझे लेकिन कोई गुमान नहीं।
 देश का सिपाही होना इतना भी आसान नहीं ।।



राखी भार्गव
 प्रबंधक(राजभाषा)
 क्षेत्रीय कार्यालय-1, हैदराबाद

देश की रक्षा हेतु हम सदैव तैनात होते हैं।
 इसी विश्वास पर तो मेरे देशवासी चैन से सोते हैं।।
 आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की खातिर।
 हम अपनी जान की बाज़ी लगा देंगे।।

फिर भी फौज में आने से डरते हैं लोग।
 जैसे यहां वो अपनी जान गंवा देंगे।।
 आप भी तो सिपाही के इन हालात से अनजान नहीं।
 देश का सिपाही होना इतना भी आसान नहीं।।

मटके वाला घर

आलेख

क हते हैं पुराने जमाने में लोग गर्मी के मौसम में पानी को ठंडा रखने के लिए चमड़े या मिट्टी से बने बर्तनों का उपयोग करते थे। धीरे-धीरे मिट्टी के बर्तनों का उपयोग पानी को ठंडा रखने के लिए किया जाने लगा जिनमें से मटका और सुराही बहुत प्रचलित हुए और आज भी काफी लोग इनका इस्तेमाल करते हैं। लेकिन समय बदला, नई तकनीक के आने के बाद इनका उपयोग खत्म सा ही हो गया है और अब इनकी जगह घरों तथा कार्यालयों में फ्रिज और वाटर कूलर ने ले ली है। इस तरह के बदलाव आपको हर क्षेत्र में देखने को मिलेंगे। वर्ष 1983 में जब मैंने बैंक ज्वाइन किया था उस समय मनी ट्रांसफर के लिए ग्राहक पे आर्डर, डीडी और टेलीग्राफिक ट्रांसफर का उपयोग करते थे। बैंक के कंप्यूटरीकरण और कोर बैंकिंग सिस्टम (सीबीएस) के बाद मनी ट्रांसफर के लिए डीडी का उपयोग भी अब खत्म सा ही हो गया है और उसकी जगह ऑनलाइन ट्रांसफर आरटीजीएस और एनईएफटी ने ले ली है। नई तकनीक हमेशा ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती है क्योंकि यह सुविधाजनक, तेज और सस्ती होती है।

मुझे याद है वर्ष 2008 में जब मैं दिल्ली की एक शाखा में प्रबंधक था उस समय बैंक का एक नियमित ग्राहक अक्सर बैंक में ड्राफ्ट बनवाने आते थे। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा, “सर क्या आपके पास एनईएफटी और आरटीजीएस की सुविधा नहीं है?” उन दिनों हमारी शाखा सीबीएस नहीं थी, इसलिए मुझे ना कहना पड़ा। मैंने नोट किया कि उन्होंने कुछ दिन बाद हमारी शाखा में आना बंद कर दिया था और एक दिन वह आए और अपना खाता बंद करके चले गए। खाता बंद करने का कारण एनईएफटी और आरटीजीएस सुविधा का ना होना था। खैर, हमारे बैंक ने भी कुछ समय बाद सभी शाखाओं को सीबीएस किया और हमारा बैंक भी डिजिटलीकरण की तरफ अग्रसर हुआ।

वर्ष 2013 में मेरा चयन संकाय के पद पर हुआ और मुझे आरएसटीसी, चंडीगढ़ में काम करने का मौका मिला। प्रशिक्षण के दौरान हम सभी प्रशिक्षणार्थियों को बैंक के डिजिटल उत्पाद जैसे- एटीएम कार्ड एवं डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, क्रेडिट कार्ड, आरटीजीएस और एनईएफटी के बारे में बताते थे ताकि वे



बी.के. उप्रेती
 वरिष्ठ प्रबंधक(सेवानिवृत्त)
 केनरा बैंक

इनका खुद भी उपयोग करें और ग्राहकों को भी प्रेरित करें ताकि बैंक के ग्राहक 24/7 बैंकिंग का लाभ उठा सकें। इस दौरान हमें यह भी निर्देश दिए गए थे कि संकाय समय-समय पर शाखाओं का दौरा करें और कर्मचारियों को इन सभी डिजिटल उत्पादों के बारे में बताएं और ग्राहकों को भी अवगत कराएं।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने जालंधर की एक शाखा का दौरा किया और वहां पर उपस्थित स्टाफ को बैंक के डिजिटल उत्पाद के बारे में बताया और उनसे अनुरोध किया कि जो भी ग्राहक हमारे मौजूदा उत्पाद मांगता है तो उसके समतुल्य डिजिटल उत्पाद की जानकारी दें, जैसे-कोई चेक बुक मांगता है तो उसको एटीएम कार्ड के बारे में बताएं, कोई ओवरड्राफ्ट चाहता है तो उसको क्रेडिट कार्ड के बारे में बताएं और यदि कोई डीडी लेने आता है तो उसको एनईएफटी और आरटीजीएस की सुविधा के बारे में बताएं।

इस तरह जब मैं इस विषय पर शाखा के कर्मचारियों से चर्चा कर रहा था तभी एक ग्राहक काउंटर पर बैठे अधिकारी से ₹13 लाख के डीडी के लिए लगने वाले कमीशन के बारे में पूछ रहे थे। उस अधिकारी ने चार्ट देखकर ग्राहक को बताया, सर ₹3500- डीडी कमीशन होगा और उनको डीडी चालान थमाने लगे। तभी ग्राहक ने कहा, “सर, मुझे अगले हफ्ते डीडी बनवाना है”। मैं यह वार्तालाप सुन रहा था। मैंने काउंटर पर बैठे अधिकारी को कहा कि डीडी का

विकल्प आरटीजीएस है और इसके बारे में ग्राहक को बताओ। वह कहने लगा “सर, डीडी के बारे में पूछ रहे हैं इसलिए मैंने आरटीजीएस के बारे में नहीं बताया”। मैंने ग्राहक को बताया, “सर आप डीडी लेने की बजाय इलेक्ट्रॉनिक मोड से भी मनी ट्रांसफर करा सकते हैं और इस सुविधा का नाम है आरटीजीएस, मैंने कहा आरटीजीएस के माध्यम से रकम तुरंत आदाता(पानेवाला) के खाते में ट्रांसफर हो जाती है। यह बहुत ही आसान, तेज और सुरक्षित सुविधा है।” ग्राहक कहने लगा “सर, मुझे इलेक्ट्रॉनिक मोड ऑफ पेमेंट में विश्वास नहीं है, डीडी ही बनवाना ठीक लगता है क्योंकि डीडी लेने के बाद उसकी फोटो कॉपी करा लेता हूँ और अपने रिकॉर्ड में रख लेता हूँ।” कहने लगे – “कभी भविष्य में मुझे यह रकम नहीं मिली तो इसका प्रूफ क्योंकि मेरे पास होगा मैं अदालत में भी पेश कर सकता हूँ।” मैंने कहा “आरटीजीएस के माध्यम से भी मनी ट्रांसफर का प्रूफ आपको मिलेगा जो आप अपने रिकॉर्ड के लिए रख सकते हैं और यह प्रूफ भी कोर्ट में मान्य है।” मैंने उनको आरटीजीएस और एनईएफटी सुविधा के फायदे गिनाने शुरू किए।

- 1) रकम सीधा पेयी(आदाता) के खाते में जाएगी। डीडी के खोने का डर बना रहता है।
- 2) डीडी खरीदने के बाद यदि पेयी शहर से बाहर रहता है तो डीडी को कोरियर या डाक से भेजना होता है। इसके लिए आपको अतिरिक्त डाक खर्च और समय की बर्बादी होती है।
- 3) यदि डीडी आउट स्टेशन भेजना है तो 3 या 4 दिन पहले आपका खाता तेरह लाख रुपए से डेबिट होगा। आपको 3 या 4 दिन का खाते में ब्याज का नुकसान होगा। आजकल खाते में ब्याज प्रतिदिन के आधार पर लगता है।
- 4) डीडी का कमीशन ₹500/- है जबकि आरटीजीएस का कमीशन उन दिनों ₹50 था।
- 5) आपको आरटीजीएस से ₹3250 की बचत हो रही है।
- 6) इन सब तर्कों को सुनने के बाद उनके दिमाग की बत्ती जल गई। वह यह सुनकर हैरान हो गए कि ₹3250/- का फायदा है तो यह सुविधा अच्छी है। वह कहने लगे सर “मुझे अगले हफ्ते तेरह लाख भेजने हैं।” मैंने कहा “आप डीडी चालान की जगह आरटीजीएस चालान भरना और इस अधिकारी से

बात करना, यह आपकी मदद करेंगे।” मेरी बात सुनकर वे राज़ी हो गए और खुशी-खुशी चले गए। मैंने काउंटर पर बैठे सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे इस तरह से ग्राहकों को डिजिटल विकल्प के बारे में बताएं।

तभी लंच का समय हो गया था। मैंने भी सभी के साथ लंच किया और लंच के तुरंत बाद ही प्रबंधक जी से स्टाफ मीटिंग के आयोजन का अनुरोध किया। शाखा में उपस्थित सभी कर्मचारी मीटिंग में आ गए। मैंने उनसे लंच में ग्राहक से हुए वार्तालाप की चर्चा का ब्योरा पेश किया और बताया कि किस तरह से मैंने ग्राहक को डीडी की बजाए आरटीजीएस के माध्यम से मनी ट्रांसफर के लिए प्रेरित किया, जोकि ग्राहक और बैंक दोनों के लिए फायदे का सौदा है।



तभी एक कर्मचारी कहने लगे सर मुझे आरटीजीएस सुविधा के बारे में मालूम है, लेकिन सोचिए यदि वह ग्राहक डीडी लेता है तो हमको ₹3500/ का कमीशन मिलता है, लेकिन आरटीजीएस के माध्यम से ग्राहक को ₹3250 का लाभ और उतने का ही हमारी शाखा को नुकसान। उसकी बात से सभी कर्मचारी सहमत हो गए और कहने लगे “सर यह तो बैंक के लिए घाटे का सौदा है।” कुछ देर इस विषय पर बहस हुई और अंत में शाखा के प्रबंधक महोदय ने भी कर्मचारी द्वारा दिए गए तर्क का अनुमोदन कर दिया। मुझे उनकी बात सुनकर लगा अभी तो आधा युद्ध ही जीता है और आधा जीतना बाकी है।

इस स्थिति से निपटने के लिए मैंने एक किस्सा सुनाया। वर्ष 1970 के आसपास हमारे घर में बहुत से लोग गर्मी के दिन में पानी



पीने आया करते थे। उनमें से कुछ अपने जानकार मित्र, संबंधी और कुछ राहगीर होते थे। उनकी सुविधा के लिए घर के बाहर हम 4 बड़े-बड़े मटकों में पानी भर कर रख दिया करते थे और लोग उस मटके में भरे ठंडे पानी का इतना उपयोग करते थे कि कई बार दिन में 3 या 4 बार पानी भरना पड़ता था। 20 वर्ष तक हमारे घर के बाहर रखे गए मटके का प्यासे राहगीरों ने खूब उपयोग किया और हमारे घर को 'मटके वाला घर' का खिताब भी मिल गया। भरी गर्मी में जिसको भी पानी पीना होता, वह हमारे घर की ओर इशारा कर देता था कि मटके वाले घर जाओ। वर्ष 1990 में हमारे पड़ोसी, जिनका बिजनेस अच्छा चल गया था उनके मन में विचार आया क्यों न प्यासे को पानी पिला कर मैं भी पुण्य कमा लूं। उन्होंने अपने घर के बाहर प्यासे राहगीरों के लिए इलेक्ट्रिक वाटर कूलर लगवा दिया जिसमें निरंतर पानी आता रहता था। इलेक्ट्रिक कूलर लगते ही हमारे मटके का पानी भरी गर्मी में भी भरा का भरा रह गया और प्यासे लोगों की भीड़ इलेक्ट्रिक कूलर वाले घर की ओर मुड़ गई। कुछ दिन बाद हमने भी घर के बाहर रखे मटके में पानी भरना बंद कर दिया। टेक्नोलॉजी का स्वाद लगते ही मेरे 20 साल से चले आ रहे मटके अनुपयोगी हो गए। आज हमारे घर के बाहर अब मटके नहीं हैं लेकिन आज भी मेरा घर 'मटके वाला घर' के नाम से जाना जाता है।

मैंने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा "दोस्तो, यदि आपको अपने बच्चों के खाते में मनी ट्रांसफर कराना है तो आप डीडी बनावाएंगे या आरटीजीएस, एनईएफटी के माध्यम से मनी ट्रांसफर करेंगे। मैंने कहा डीडी बनाने में कितने झंझट-पहले इंट्री करो, फिर सिव्योरिटी पेपर निकालो, प्रिंटर में फिट करो, उसका प्रिंट लो, प्रिंट यदि ठीक से ना आया तो डीडी का रीप्रिंट लो, अधिकारी के साइन कराओ, फिर ग्राहक की पावती(एकनोलेजमेंट) लो-झंझट ही झंझट। आरटीजीएस और एनईएफटी बहुत आसान है। मैंने उन्हें बताया किस तरह से मेरी शाखा का एक वीआईपी ग्राहक खाता बंद

करा के चला गया जब यह सुविधा हमारे बैंक में नहीं थी। आपको शायद पता नहीं होगा बहुत से ग्राहक आपसे नाता तोड़कर किसी और बैंक के साथ बिजनेस कर रहे होंगे जैसा मेरे साथ हुआ। मैंने कहा आज का ग्राहक टेक सेवी है। वह उसी शाखा/बैंक से जुड़ा रहेगा जो समय के अनुसार अपनी तकनीक और उत्पाद(प्रोडक्ट) को अपडेट करता रहेगा। ग्राहक अब ऐप आधारित बैंक से जुड़ना चाहता है। वह बैंक नहीं आना चाहता, पर अपनी सुविधा एवं मन मर्जी से बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करना चाहता है। यदि आपका यह तर्क है कि बैंक को आरटीजीएस और एनईएफटी से कमीशन में कमी आ रही है तो क्या हमारे बैंक प्रबंधन/वित्त मंत्रालय और भारतीय रिज़र्व बैंक को इसकी जानकारी नहीं है?"

उनको पता है कि आने वाले समय में वही बैंकिंग का सिकंदर होगा जिसके पास आधुनिक और नवीनतम तकनीक होगी। इसलिए, ग्राहक को तकनीकी विकल्प के बारे में बताएं जैसे- एटीएम/डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट एवं मोबाइल बैंकिंग, एनईएफटी आरटीजीएस, ऑन लाइन खाता खोलने की सुविधा और वह सभी ऐप जो ग्राहकों की सुविधा के लिए बनाए गए हैं। मैंने पूछा था "क्या आप चाहेंगे कि भविष्य में लोग आप की शाखा को डीडी वाली शाखा के नाम से जाने जैसे मेरे घर को आज भी मटके वाले घर के नाम से जाना जाता है।"

फंडा - "जागो केनराईट जागो, समय बदल गया है और ग्राहक जागरूक है।" कोविड की महामारी, युवा ग्राहक और वर्क फ्रम होम जैसे - नए माहौल में नवाचार, नवीनतम तकनीक और तकनीक उत्पाद ही बैंक की कार्यप्रणाली को किसी भी दैविक आपदा/संकट और महामारी की स्थिति में भी चलायमान रख सकते हैं। समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है क्योंकि परिवर्तन ही है जोकि एक शाश्वत सत्य है।



"कोई भी व्यक्ति पीछे जाकर खराब शुरुआत को सुधार नहीं सकता, पर हर व्यक्ति नई शुरुआत करके एक सफल अंत कर सकता है।"

- कार्ल बाई

प्रभावी संप्रेषण और वाचन कौशल

आलेख

सं प्रेषण एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानकारी अंतरित करने का कार्य है। उसे शब्दों में (आवाज़ का प्रयोग करते हुये), दृष्टिगत रूप से (जैसे-किताबों, पत्रिकाओं, वेबसाइटों या ई-मेल जैसे मुद्रित या डिजिटल मीडिया का प्रयोग करते हुए) या गैर-मौखिक रूप से (शारीरिक भाषा, हावभाव, लहजा व स्वर का प्रयोग करते हुए) लिखा जा सकता है। दरअसल, इस जानकारी का संप्रेषण कितनी अच्छी तरह से हो पाता है, यह इस बात पर निर्भर है कि हमारा संप्रेषण कौशल कितना अच्छा है। रिश्ते बनाने के लिए व्यवसायिक और घर दोनों मोर्चों पर संप्रेषण अत्यावश्यक है। अच्छे संप्रेषण कौशल से जीवनभर आपको मदद मिलती रहेगी। हमारे कार्यस्थल में सफल होने के लिए आवश्यक मौलिक कौशल की सूची में संप्रेषण कौशल का स्थान सबसे ऊपर है। महान नेताओं के बारे में एक विशेषता यह है कि उनमें प्रभावी संप्रेषण करने की क्षमता होती है जो इस बात को स्पष्ट दर्शाता है कि संप्रेषण कौशल कितना अधिक महत्व रखता है।

संगठनों में संप्रेषण :

संगठन, चाहे बड़े हो या छोटे, वाणिज्यिक हो या गैर-वाणिज्यिक या लाभकारी हो या गैर-लाभकारी, सभी की संरचना का मूल उद्देश्य लक्ष्यों को साधना है। किसी संगठन में संप्रेषण की प्रक्रिया में वरिष्ठ अधिकारी, सहकर्मी समूह के सदस्य और बाहरी परिवेश जुड़ते हैं। संप्रेषण के अभाव में, मनुष्य को उस प्रकार के व्यक्ति के रूप में रहना पड़ सकता है जहां भावनाओं, अनुभवों, ज्ञान आदि को बांटने के अनुभव का लाभ का अभाव है। संप्रेषण के बिना मनुष्य को कमियां दूर करने और उपलब्धियों को हासिल करने के लिए एक समूह के रूप में कार्य करना संभव नहीं हो सकेगा। संप्रेषण में, व्यक्तियों के बीच विचारों, सूचना, समझ, भावनाओं, संवेदनाओं आदि का आदान-प्रदान होता है। इसे - व्यक्ति क्या कहता है और क्यों, किसके माध्यम से और कितने प्रभावी रूप से कहता है, के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि संप्रेषण की अवधारणा इसमें शामिल पक्षों के बीच एक आम समझ है - जिसे हम 'प्रेषक' और 'प्राप्तकर्ता' के रूप में देखेंगे और जो संप्रेषित किया जाता है, उसे हम 'संदेश' मानेंगे। 'संदेश' के दायरे में विचारों से लेकर डाटा व आंकड़े सहित भावनाएं और अनुभूतियां सब कुछ शामिल हैं।



ओमप्रकाश एन एस
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

संप्रेषण का महत्व :

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा संप्रेषण पर लगाए गए समय पर काफी अध्ययन किए गए हैं। किसी भी समूह, विभाग, संगठन के प्रमुख से किसी न किसी प्रकार के संप्रेषण पर अपना अधिकांश समय बिताने की उम्मीद की जाती है। इसका अर्थ यह है कि किसी निश्चित संदर्भ में उस व्यक्ति की प्रभावशीलता, दक्षता, रचनात्मकता और उत्पादकता कितना प्रभावी है, यह इस बात पर निर्भर होगा कि वह व्यक्ति कितने कुशलतापूर्वक, रचनात्मक और उर्वरतापूर्वक संप्रेषण कर पाता है। बैंकिंग उद्योग में संप्रेषण प्रक्रिया अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है। संप्रेषण प्रणाली कैसी है और यह कितना प्रभावी है, हमारे संगठन की अंतिम प्रभावशीलता पर इस बात का गहरा असर होता है।

संप्रेषण की प्रक्रिया :

जो कुछ भी संप्रेषित होता है उसे 'संदेश' कहा जाता है। जिस व्यक्ति से संदेश की उत्पत्ति होती है - यानी वह व्यक्ति जो संप्रेषण की प्रक्रिया की शुरुआत करता है - उसे 'प्रेषक' कहा जाता है। जिस व्यक्ति के लिए वह संप्रेषण अभिप्रेत है, उसे 'प्राप्तकर्ता' कहा जाता है।

संप्रेषण 'वैक्यूम' यानी 'निर्वात' में नहीं हो सकता है। इसमें एक माध्यम या चैनल का होना आवश्यक है। संदेश प्राप्त करने के

बाद, उसके लिए प्रावधान मौजूद होने पर 'प्राप्तकर्ता' प्रेषक को प्रतिक्रिया या जवाब देगा। संप्रेषण प्रक्रिया के इस हिस्से को 'फीडबैक' कहा जा सकता है। जब 'प्रेषक से प्राप्तकर्ता को फीडबैक' देने के लिए कोई प्रावधान नहीं है, तो इसे एक तरफा संप्रेषण कहा जा सकता है। यह, ज्यादातर मामलों में इच्छित संदेश और प्राप्त होने वाले संदेश के बीच विकृति को बढ़ा सकता है। प्रभावी संप्रेषण के संबंध में कई बाधाएं हैं जो किसी भी स्तर पर इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं और उन्हें सामूहिक रूप से 'शोर' शब्द निर्दिष्ट किया जा सकता है।

प्रभावी संगठनात्मक संप्रेषण के संबंध में बाधाएं :

ऐसी कई बाधाएं हैं जो संप्रेषण की प्रक्रिया में बाधा डाल सकती हैं जिसके परिणामस्वरूप संप्रेषण में व्यवधान उत्पन्न होता है। प्रभावी संप्रेषण के लिए कुछेक सामान्य बाधाओं के बारे में विवरण नीचे दिये गये हैं :

(i) प्रसारण या हस्तांतरण में परिवर्तन :

इसमें इस बात का जिक्र है कि किस प्रकार विभिन्न लोगों से गुजरते हुए एक मूल संदेश में कितना कुछ परिवर्तन आ जाता है। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वर्ग, शैक्षिक स्तर, आयु समूह, अनुभव, इत्यादि जैसे विभिन्न कारक के संबंध में शामिल लोगों के बीच अंतर जितना अधिक होगा, मूल संदेश में उतना ही अधिक बदलाव आएगा। इस बाधा को दूर करने या कम से कम इसके दुष्प्रभावों को कम करने का एक प्रभावी तरीका है - उस संदेश के प्राप्तकर्ता से कहना कि वह वही दोहराये जैसा उसने समझा है।

(ii) भौतिक सीमाएं :

धारणा और वास्तविकता के बीच के अंतर को वैचारिक त्रुटि कहा जा सकता है। हमारी संवेदी सीमाएं यानी- दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श, स्वाद और गंध-हमारी वैचारिक स्पष्टता को बाधित करते हैं।

(iii) असावधानी :

यह प्राप्तकर्ता से संबंधित है, संदेश पर उचित ध्यान देने के संबंध में सावधानी बरतनी होगी। प्रेषक की भूमिका में, व्यक्ति को चाहिए कि इस बात को सुनिश्चित कर लिया जाये



कि प्राप्तकर्ता द्वारा अपेक्षित ध्यान दिया जा रहा है, उसके बाद ही संप्रेषण करना चाहिए। प्रेषक के साथ भौतिक रूप से निकटता साधने के बावजूद, प्रेषक के ध्यान का स्तर कम हो सकता है या प्रेषक द्वारा बात करते समय उसके विचार पक्ष अन्यत्र कहीं हो सकते हैं।

(iv) ध्यानपूर्वक सुनना :

जब प्राप्तकर्ता जानकारी को अवरुद्ध करते हैं, खासकर जब यह किसी के विश्वास के विपरीत है, तो इसका परिणाम ध्यानपूर्वक सुनने में होता है। लोगों द्वारा अपने निर्दिष्ट विचारों के विरुद्ध पाये जानेवाली किसी भी जानकारी को अनदेखा या विकृत करना एक आम बात है।

(v) स्रोत के प्रति संदेह :

समय के साथ-साथ, हम प्रेषक द्वारा कही गयी बातों के संबंध में हमारे अंदर आत्मविश्वास या भरोसा घट कर लेते हैं। इसे स्रोत की विश्वसनीयता कहा जा सकता है। एक प्रभावी संप्रेषणकर्ता होने के लिए, व्यक्ति को चाहिए कि जानकारी के विश्वसनीय स्रोत के रूप में स्वयं को विकसित करें।

(vi) अतिशयोक्ति :

अपनी प्रस्तुति को नाटकीय बनाने या इसे अधिक आकर्षक, हास्यपूर्ण, इत्यादि बनाने के लिए व्यक्ति अतिशयोक्ति का सहारा लेता है। तथापि, यह पाया गया है कि अपनी बात को अतिरंजित रूप से पेश करने की वजह से

व्यक्ति लंबे अंतराल में अक्सर अपनी विश्वसनीयता खो देता है।

(vii) विकृति :

विभिन्न कारकों के कारण मूल संदेश की विकृति हो सकती है। विकृति आकस्मिक या जानबूझकर हो सकती है। पूर्व के मामले में, अंतिम परिणाम अवांछित और हानिकारक है।

(viii) विशिष्टता :

किन्हीं दो घटनाओं, दो चीजों या दो व्यक्तियों में समानता नहीं पायी जाती है। व्यक्तियों की विशिष्टता, उनके अनुभव और इसके परिणामस्वरूप, उनकी धारणाएं भिन्न होती हैं। किंतु यह भी सच है कि हर व्यक्ति अपने आप में विशिष्ट होता है।

(ix) अव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त संदेश :

अव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त संदेश – अपर्याप्त तैयारी, माध्यम पर अपर्याप्त नियंत्रण, प्रेषक के व्यवहार, आदि के परिणामस्वरूप हो सकता है। यहां तक कि एक गलत विराम चिह्न भी बुरी तरह से अभिव्यक्त संदेश का कारण बन सकता है जो किसी भी अर्थ को अभिव्यक्त नहीं कर पाता है या अनापेक्षित संदेश संप्रेषित करता है।

(x) अस्पष्ट धारणाएं :

जब कोई सुनता, देखता या पढ़ता है तो वह कुछ धारणाएं बना लेता है, जिनका वास्तव में कोई संबंध नहीं होता। जब कोई गलत धारणाओं के आधार पर निर्णय लेता है या कार्रवाई करता है तो नतीजा विनाशकारी होता है।

(xi) अन्यमनस्कता :

मानसिक व्यस्तता के फलस्वरूप होनेवाली अन्यमनस्कता से प्रभावी संप्रेषण के लिए बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न हो सकती है। प्राप्तकर्ता की भूमिका निभाते समय व्यक्ति को चाहिए कि वह उससे स्वयं को बचाये रखे और प्रेषक की भूमिका निभाते समय उसे प्राप्तकर्ता की ओर से पायी जानेवाली अन्यमनस्कता के संकेतों पर नज़र रखते हुए उसकी ओर से उचित ध्यान और भागीदारी सुनिश्चित करे।

(xii) समय का अभाव :

अधिकार और ज़िम्मेदारी के पद पर रहने वाले लोगों के पास सभी के साथ संवाद करने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता। समय के अभाव में अनुचित और अपर्याप्त संप्रेषण हो सकता है। समय के अभाव में संप्रेषण से वंचित रह जाना होगा यानी इसका अर्थ है – लोगों को संप्रेषण के औपचारिक चैनल से बाहर रखा जाना।

किसी भी टीम या समूह की संप्रेषण की गुणवत्ता की जांच करने के लिए एक खेल खेला जा सकता है :

संप्रेषण की गुणवत्ता :

अपनी टीम के साथियों की संप्रेषण की गुणवत्ता या क्षमता की जांच करने के लिए, एक खेल खेलें। इस खेल के तहत समूह से एक व्यक्ति को बुलाएं और उस सदस्य से मौखिक संवाद करें। अब उस सदस्य को एक ही संदेश को अन्य टीम के सदस्य से संवाद करने के लिए बताएं, वैसे ही अगला टीम सदस्य उस जानकारी को समूह के अन्य सदस्य तक, तब तक पहुंचाता रहेगा जब तक कि वह जानकारी समूह के अंतिम सदस्य तक पहुंच नहीं जाती। अब अंतिम सदस्य को टीम के सम्मुख बुलाएं और उसे पिछले सदस्य से प्राप्त संदेश को पहुंचाने दें। इस चरण में सभी सदस्यों के साथ मूल संदेश को साझा करें। आप पायेंगे कि संदेश पूरी तरह से विकृत हो गया है या अधूरा संदेश अग्रेषित किया गया है।

यह खेल अलग-अलग समूह बनाकर या एक ही कार्य प्रत्येक समूह को दिया जा सकता है और समूह के बीच संदेश अभिव्यक्त करने की गुणवत्ता का पता लगाने के लिए खेला जा सकता है।

संप्रेषण कौशल में सुधार लाना :

पुरानी कहावत याद होगा, पढ़ने से एक पूर्ण व्यक्ति बनता है, लिखने के ज़रिए एक सटीक व्यक्ति बनता है और विचार-विमर्श एक तैयार व्यक्ति बनाता है- एक बुद्धिमान संप्रेषणकर्ता बनने के लिए इसका अभ्यास अवश्य करें।

यद्यपि संप्रेषण के विभिन्न रूप हैं, इसके बावजूद हम अक्सर, मौखिक रूप से संवाद करने में अधिक विश्वास रखते हैं। मौखिक संप्रेषण में निम्नलिखित शामिल हैं:

(i) सुनना

(ii) बोलना

प्रभावी संगठनात्मक संप्रेषण सुनिश्चित करने के लिए कोई जादुई फार्मूला नहीं है क्योंकि यह एक जटिल प्रक्रिया है। किंतु, संगठनात्मक संप्रेषण को बेहतर किया जा सकता है। प्रभावी संप्रेषण की बाधाओं के बारे में जागरूकता बनाये रखने से दो तरीके से मदद मिल सकती है:

- (1) बाधाओं से बचना या अपने संप्रेषण में उनके दुष्प्रभावों को कम करना।
- (2) अन्य व्यक्तियों के संप्रेषण में पायी जानेवाली कमियों का अनुमान लगाना ताकि संप्रेषण में आनेवाली बाधाओं को दूर करने में इससे मदद मिल सकें।

एक बेहतर संप्रेषण के प्रयास में, उसे न केवल स्वयं को समझे जाने का प्रयास करना चाहिए बल्कि समझने के लिए भी प्रयास करना चाहिए। कार्य दो गुना है। सबसे पहले, संदेश में सुधार किया जाना चाहिए। इसलिए यह समझ होनी चाहिए कि अन्य लोग उन्हें क्या संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हैं।

इन तकनीकों की पूर्ति में सहायता करने वाली कुछ तकनीक पर नीचे चर्चा की गई है:

1. प्राप्तकर्ता उन्मुखीकरण:

संप्रेषण में सुधार लाने के लिए, व्यक्ति को प्राप्तकर्ता की भाषा बोलनी चाहिए। श्रोताओं की बुद्धि और पृष्ठभूमि के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करने के साथ-साथ उनकी व्यवहार्यता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

2. मूल बातों पर ध्यान देना :

प्रभावी संप्रेषण के लिए एक मार्गदर्शी सिद्धांत के रूप में मूल बातों की ओर हमेशा उचित ध्यान दिया जाना चाहिए जैसे – आकर्षणीयता, संक्षिप्तता और स्पष्टता।

3. उपयुक्तता:

संप्रेषण बहुत अधिक या बहुत कम नहीं होना चाहिए। साथ ही यह बहुत औपचारिक या बहुत अनौपचारिक भी नहीं होना



चाहिए। चर्चा का विषय, प्राप्तकर्ता का स्वभाव, समय की उपलब्धता आदि बातों का ध्यान रखते हुए संप्रेषण गंभीर या हास्यपूर्ण होना चाहिए।

4. हास्य का प्रयोग:

संप्रेषण प्रक्रिया चलती पुर्जों वाली मशीनरी के कार्य के समान है जिसके संबंध में घर्षण-मुक्त सुचारू कार्यसंचालन के लिए लचीलेपन (लूब्रिकेशन) की आवश्यकता होती है। संप्रेषण की प्रक्रिया के लिए एक प्रभावी 'स्नेहक' या लुब्रिकेंट हास्य ही है। हालांकि, अनैच्छिक या नकारात्मक परिणामों से बचने के लिए इसे समझदारी से इस्तेमाल किये जाने की ओर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए।

5. सही अपील का उपयोग:

सही अपील का उपयोग होने पर संप्रेषण की प्रभावशीलता में काफी वृद्धि होगी। संप्रेषण कौशल प्रत्येक परिस्थिति के लिए सही अपील की पहचान करने और फिर इसका उपयोग करने में निहित है।

6. पुनरावृत्ति:

सीखने का सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सिद्धांत यानी पुनरावृत्ति, संप्रेषण की प्रभावशीलता में बहुत योगदान दे सकती है। पुनरावृत्ति से यह सुनिश्चित होगी कि भले ही संदेश का एक भाग समझ में नहीं आता है, किंतु संदेश के अन्य भाग भी होते हैं, जिनका समान अर्थ होता है।

7. प्रभावी समय:

बेशुमार संदेश होते हैं जिनकी एक साथ लोगों का ध्यान आकर्षित करने की होड़ लगी होती है। इनमें से कई संदेश ऐसे होते हैं जिनकी व्याख्या तक नहीं हो पाती या प्राप्त नहीं हो पाती है क्योंकि इन सभी को स्वीकार करना असंभव सा होता है। संदेशों को सर्वाधिक समझ पाना और प्राप्त कर पाना तब संभव होता है जब उनको अन्य संदेशों से सबसे कम प्रतिस्पर्धा से गुजरना होता है। अनुचित समय के परिणामस्वरूप, विकृतियां और मूल्य संबंधी धारणाएं उत्पन्न हो सकती हैं जो हानिकारक हैं।

8. भाषा को सरल बनाना:

कई लोग, विशेष रूप से शिक्षकों और प्रशिक्षकों के पास तकनीकी शब्दावली का सहारा लेने की आदत होती है जो सरल अवधारणाओं को जटिल पहेली में बदल देती है। जटिल भाषा प्रभावी संप्रेषण के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा

है। यह पहचान किया जाना चाहिए कि प्रभावी संप्रेषण में दोनों समझना और सूचना को संचारित करना शामिल है।

9. प्रभावी रूप से सुनना:

प्रभावी रूप से सुनना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि प्रभावी रूप से बोलना। सही तरीके से सुनने के ज़रिए, अन्य को भी सच्ची भावनाओं, उम्मीदों और आकांक्षाओं को व्यक्त करने के प्रति प्रोत्साहित किया जा सकता है। सिर्फ सुनने से अधिक, 'समझ के साथ सुनना' आवश्यक है।

निष्कर्ष:

संदेश देने के साथ-साथ उन्हें ग्रहण करने में भी प्रभावी होना चाहिए। स्वयं को दूसरों द्वारा समझे जाने और स्वयं द्वारा समझने के अपने प्रयास में उन्हें प्रभावी ढंग से संवाद करना चाहिए, जिससे प्रबंधक के रूप में उनकी प्रभावशीलता और दक्षता में सुधार लाने में बहुत मदद मिलेगी।



कुछ बातें

ज़िंदगी इतना मगरूर क्यों है
 इंसान में इतना गुरूर क्यों है ?
 माँ के आँचल में इतना सुकून क्यों है !
 शक्ति दवा से ज्यादा दुआ में क्यों है ?
 धरती इतनी सुंदर क्यों है !
 अम्बर इतना नीला क्यों है ?
 सूरज की किरण इतनी चुभती क्यों है !
 तो कभी इतना आरामदेह क्यों है ?
 सोचने की ताकत है समझने की काबिलियत है !
 फिर भी इक पशु, मानव से ज्यादा वफादार क्यों है ?
 जल ही जीवन तो वही विनाश क्यों है !
 प्यार और तकरार का दर्द इतनी मिठी क्यों है ?
 भगवान की सूरत पत्थर में क्यों है !
 बुजुर्गों की जगह वृद्धाश्रम में क्यों है ?
 आज इंसानियत इतना बदनाम क्यों है !



शुभाशीष समल
 परिवीक्षाधीन अधिकारी
 केनरा बैंक
 राजनगर शाखा, जमशेदपुर

पता नहीं यारों मन में इतना सवाल क्यों है ?
 ना सुकून है ना चैन है !
 ना जवाब है ना कशिशा है ?
 फिर भी ज़िंदगी इतनी हसीन क्यों है !
 और जीने में इतना आनंद क्यों है ?
 इसलिए जीवन हमेशा औरों के लिए जीयें !

केनरा बैंक अखिल भारतीय अंतरा-बैंक ऑनलाइन राजभाषा संगोष्ठी - 2021

केनरा बैंक अखिल भारतीय अंतरा-बैंक ऑनलाइन राजभाषा संगोष्ठी 25 जून, 2021 को पॉलीकॉम ऐप के माध्यम से 'साइबर सुरक्षा के उपाय और जागरूकता' विषय पर आयोजित किया गया। संगोष्ठी में श्री नगेंद्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में ऑनलाइन जुड़े थे। श्री एल.वी.आर. प्रसाद, मुख्य महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित थे। श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग भी उपस्थित थे। पॉलीकॉम ऐप से बैंक में कार्यरत राजभाषा अधिकारी अपने-अपने कार्यस्थल से जुड़े थे। कुल 15 प्रतिभागियों ने विषय पर प्रस्तुति दी।

आरम्भ में श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने उपस्थित गणमान्य का स्वागत किया। श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक ने श्री नगेंद्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को सूचित किया कि केनरा बैंक में सीबीएस के राजभाषा वर्शन को लाइव कर दिया गया है। अब हमारे बैंक की किसी भी शाखा से पासबुक, जमा रसीद आदि की हिंदी में प्रिंट ली जा सकती है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि अब हमारे बैंक में एसटीआर 18 की रिपोर्टिंग ऑनलाइन माध्यम से की जा रही है तथा शीघ्र ही वेतन पर्ची भी हिंदी में जारी करने की योजना है।

संगोष्ठी के निर्णायकों के रूप में श्री दीपक शुक्ल, उप महा प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, प्रधान कार्यालय और श्री वादिराज कुलकर्णी, मंडल प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, प्रधान कार्यालय ऑनलाइन जुड़े थे।

श्री नगेंद्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने सीबीएस के राजभाषा वर्शन को लाइव करने पर केनरा बैंक की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि विभिन्न कार्यालयों में देखा गया है कि वेबसाइट में अंग्रेज़ी की सामग्री अद्यतन हो जाती है, किंतु हिंदी की सामग्री अद्यतन करने में विलंब होता है। इसे भी साथ-साथ अद्यतन किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में बैंक की कार्यप्रणाली पूरी तरह तकनीक पर आधारित है। इसलिए डाटा की सुरक्षा करना बेहद महत्वपूर्ण है। तकनीकी का प्रयोग जितना बढ़ रहा है, साइबर अपराध का खतरा भी उतना ही बढ़ गया है। अतः जागरूकता से ही साइबर सुरक्षा की जा सकती है। उन्होंने दो सेट ऑफ ऑथेंटिकेशन, लॉग एनालिसिस जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने कहा कि केनरा बैंक में राजभाषा का कार्यान्वयन बेहतर ढंग से हो रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है और हम अपना दायित्व निभाएंगे। बैंकिंग के परिदृश्य में साइबर सुरक्षा के लिए जागरूकता बेहद आवश्यक है। केनरा बैंक में साइबर सुरक्षा के सभी



उपाय किए गए हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि श्री नगेंद्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग का आभार व्यक्त किया।

धन्यवाद ज्ञापन श्री बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक ने किया और कार्यक्रम का संचालन श्री डी. बालकृष्णा, प्रबंधक ने किया। पुरस्कार विजेताओं की घोषणा निर्णायक मंडल में शामिल श्री दीपक शुक्ल, उप महा प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, प्रधान कार्यालय ने किया। पुरस्कार विजेता इस प्रकार हैं : श्री कृष्ण कुमार, अध्ययन व विकास केंद्र, चंडीगढ़-प्रथम पुरस्कार; श्रीमती वैभवी त्रिपाठी, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर-द्वितीय पुरस्कार; श्री आशीष नैथानी, गाजियाबाद नवयुग मार्केट मेन-तृतीय पुरस्कार; श्री रमेश यादव, समाशोधन अनुभाग, मुंबई-प्रोत्साहन पुरस्कार; श्री विजय कुमार दीक्षित, सतर्कता विभाग प्रोत्साहन पुरस्कार।

नारी शक्ति

आलेख

नारी शक्ति देश की शान है,
नए भारत की अतुल्य पहचान है!
पैरों में बंधे बेड़ियों को तोड़ा है,
समाज को नारी सशक्तिकरण से जोड़ा है!!

पहले भारतवर्ष में परचम लहराया,
आज विश्व में देश का मान बढ़ाया!
इतना आसान नहीं होता
इस मुकाम तक पहुंचना!
गिरकर उठना, उठकर चलना और फिर संभलना!!

नारी है देवी का रूप,
नारी है ममता का प्रतिरूप!
है समाज की क्या बिसात,
जो रोक सके तुझे बंदिशों में!
कब तक तू भी जकड़ी रहेगी
समाज की इन खोखली जंजीरों में!

तू खुद एक चट्टान है,
तोड़ दे सारी बंदिशों को!
रुकना तेरा काम नहीं,
आसमां को छू ले तू
नीचे तेरा मुकाम नहीं!!



अमित कुमार
अधिकारी
अंचल कार्यालय, पटना

तेरे भी तो सपने हैं,
कुछ ख्वाब अधूरे अपने हैं!
कभी तो सुन ले मन की आवाज़,
तुझ से ही है, संसार का आगाज़!!

आज नारी ना तो अबला है,
और ना ही कमज़ोर है!
ज़मीन पर ही नहीं,
आसमान तक उनका शोर है!
आओ नारी सशक्तिकरण का गुणगान करें,
सब मिलकर नए भारत का निर्माण करें!!
जय हिन्द, जय भारत, जय नारी शक्ति !!



अग्रणी बैंक योजना-ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय और सतत विकास का रोडमैप

आलेख

सं गठनात्मक ढांचे द्वारा सामाजिक उद्देश्यों के कार्यान्वयन के लिए अग्रणी बैंक योजना की उत्पत्ति सर्वप्रथम अक्टूबर 1969 में प्रोफेसर डी.आर. गाडगिल के अध्ययन समूह द्वारा की गई थी। समूह ने ग्रामीण लोगों के लिए बैंकिंग और ऋण सुविधाओं के विकास के लिए कुछ कार्यक्रमों और योजना के साथ 'क्षेत्र दृष्टिकोण' को अपनाने की सिफारिश की थी। नवंबर 1969 में, भारतीय रिज़र्व बैंक ने क्षेत्र दृष्टिकोण की रिपोर्ट को मान्य करने के लिए एफ.के.एफ. नरीमन (नरीमन समिति) की अध्यक्षता में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के शाखा विस्तार कार्यक्रम पर बैंकों की एक समिति नियुक्त की थी। यह निर्णय लिया गया कि क्रेडिट योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रत्येक बैंक को कुछ जिलों के साथ आबंटित किया जाए, जिसे उस विशेष जिले का अग्रणी बैंक कहा जाना था।

1989 में सेवा क्षेत्र दृष्टिकोण(एसए) अपनाया गया जिसमें गांवों की पहचान की गई और उन गांवों को उनकी वित्तीय ज़रूरतों और उनके आवास से दूरी के आधार पर बैंक शाखाएं आबंटित की गईं। एसए छोटे कर्जदारों, किसानों और निम्न-आय वर्ग के लोगों को उनकी ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अग्रणी बैंक की शाखाओं से संपर्क करने में मदद करता है। मार्च 2009 के अंत तक, देश के 622 जिलों के लिए लगभग 26 वाणिज्यिक बैंक (ज्यादातर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक) को प्रमुख ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। वित्तीय क्षेत्र में हुए कई बदलावों को देखते हुए, अग्रणी बैंक योजना की पिछली बार 2009 में भारतीय रिज़र्व बैंक की तत्कालीन डिप्टी गवर्नर उषा थोराट की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय समिति द्वारा समीक्षा की गई थी।

इस योजना का उद्देश्य विभिन्न मंचों के माध्यम से बैंकों और अन्य विकास एजेंसियों की गतिविधियों का समन्वय करना है ताकि प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में बैंक वित्त के प्रवाह को बढ़ाने के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके और ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास में बैंकों की भूमिका को बढ़ावा दिया जा सके। वित्त संस्थाओं और सरकार के प्रयासों के समन्वय में अग्रणी बैंक द्वारा नेतृत्व की भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है।



शशिकान्त पाण्डेय
 प्रबंधक(राजभाषा)
 क्षेत्रीय कार्यालय-1, कानपुर

अग्रणी बैंक योजना के अंतर्गत विभिन्न मंचों/समितियों की संरचना एवं कार्य :

1. प्रखंड स्तरीय बैंकर समिति(बीएलबीसी) :

बीएलबीसी, प्रखंड स्तर पर वित्त संस्थाओं और क्षेत्र स्तर की विकास एजेंसियों के बीच समन्वय प्राप्त करने के लिए एक मंच है। यह समिति, प्रखंड की वित्त योजना के कार्यान्वयन को तैयार करती है और समीक्षा करती है और बैंकों के वित्त कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में परिचालन संबंधी समस्याओं का समाधान भी करती है। जिले के अग्रणी जिला प्रबंधक (एलडीएम) प्रखंड स्तरीय बैंकर्स समिति के अध्यक्ष होते हैं। प्रखंड में कार्यरत सभी बैंक, प्रखंड विकास अधिकारी, प्रखंड में तकनीकी अधिकारी जैसे- कृषि, उद्योग एवं सहकारिता के विस्तार अधिकारी, समिति के सदस्य होते हैं। बीएलबीसी की बैठकें त्रैमासिक अंतराल पर आयोजित की जाती हैं।

2. जिला सलाहकार समिति (डीसीसी) :

डीसीसी का गठन सत्तर के दशक की शुरुआत में जिला स्तर पर बैंकों के साथ-साथ सरकारी एजेंसियों/विभागों के लिए

एक साझा मंच के रूप में किया गया था ताकि अग्रणी बैंक योजना के तहत विभिन्न विकास गतिविधियों को लागू करने में समन्वय की सुविधा मिल सके। डीसीसी की बैठकों के अध्यक्ष ज़िला कलेक्टर होते हैं। आरबीआई, नाबार्ड, सभी वाणिज्यिक बैंक, राज्य सरकार के विभिन्न विभाग और संबद्ध एजेंसियां डीसीसी के सदस्य होते हैं। अग्रणी ज़िला अधिकारी(एलडीओ) डीसीसी के सदस्य के रूप में आरबीआई का प्रतिनिधित्व करते हैं। अग्रणी ज़िला प्रबंधक(एलडीएम) डीसीसी बैठकें आयोजित करते हैं जिसे त्रैमासिक अंतराल पर आयोजित किया जाता है।

एलडीएम की भूमिका :

प्रभावी कामकाज के लिए, अग्रणी बैंक के लिए कुछ न्यूनतम संगठनात्मक आवश्यकता हैं। एलडीएम ज़िले के सभी बैंकों का प्रवक्ता है। वह ज़िले में वित्त एजेंसियों और सरकार और विकास एजेंसियों के बीच एक संपर्क अधिकारी भी है। उनकी भूमिका में शामिल हैं: i) जिला ऋण योजना के कार्यान्वयन की निगरानी करना; ii) वित्तीय साक्षरता केंद्रों (एफएलसी) और बैंकों की आर-सेटी की स्थापना से संबद्धता; iii) एफएलसी और बैंकों की ग्रामीण शाखाओं द्वारा वित्तीय साक्षरता शिविर आयोजित करने में सहयोग; iv) गैर-सरकारी संगठनों/पंचायती राज संस्थाओं की भागीदारी से बैंकों और सरकारी अधिकारियों के लिए वार्षिक सुग्राहीकरण कार्यशालाओं का आयोजन करना।

एलडीएम वरिष्ठ स्तर का होना चाहिए, अधिमानतः वेतनमान-5 में, लेकिन किसी भी स्थिति में वेतनमान-4 से कम का नहीं होना चाहिए। एलडीएम को अनुसूचित डीसीसी/डीएलआरसी बैठकों के बाहर एलडीएम, एलडीओ और डीडीएम के बीच चल रहे समन्वय और संचार को सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र स्थापित करना चाहिए, जो अन्य बातों के साथ-साथ बैंकिंग सेवाओं के उपयोगकर्ताओं की शिकायतों के निवारण में भी मदद करेगा। एलडीएम को अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त और शक्तियों के साथ प्रत्यायोजित होना चाहिए।

ज़िला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) की बैठकें :

डीएलआरसी की बैठकों की अध्यक्षता ज़िला कलेक्टर करते हैं और डीसीसी के सदस्य इसमें भाग लेते हैं। इन बैठकों में जन



प्रतिनिधियों यानी स्थानीय सांसदों/विधायकों/ज़िला परिषद प्रमुखों को भी आमंत्रित किया जाता है। डीएलआरसी की बैठक अग्रणी बैंकों द्वारा तिमाही में कम से कम एक बार बुलाई जानी चाहिए। डीएलआरसी ज़िले में अग्रणी बैंक योजना के तहत विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की गति और गुणवत्ता की समीक्षा करने का एक मंच है।

3. राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (एसएलबीसी) :

एसएलबीसी का गठन अप्रैल 1977 में राज्य के विकास के लिए एक समान आधार पर सभी राज्यों में पर्याप्त समन्वय तंत्र बनाने के लिए एक शीर्ष अंतर-संस्थागत मंच के रूप में किया गया था। एसएलबीसी की अध्यक्षता संयोजक बैंक के अध्यक्ष/प्रबंध निदेशक /कार्यपालक निदेशक करते हैं। इसमें वाणिज्यिक बैंकों के प्रतिनिधि, भारतीय रिज़र्व बैंक(आरबीआई), नाबार्ड, सरकारी विभागों के प्रमुख शामिल हैं, जिनमें राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/ जनजाति आयोग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, आदि के प्रतिनिधि और एक राज्य में संचालित वित्तीय संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हैं, जो एक साथ बैठक में सहभागिता करते हैं और नीति सहित कार्यान्वयन स्तर पर समन्वय संबंधी समस्याओं का समाधान करते हैं। एसएलबीसी की बैठकें तिमाही आधार पर आयोजित की जाती हैं।

लीड बैंक योजना का कार्यान्वयन :

ए) क्रेडिट योजना तैयार करना :

अग्रणी बैंक योजना के कार्यान्वयन में योजना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और विकास के लिए मौजूदा क्षमता को

मैप करने के लिए एक बॉटम-अप दृष्टिकोण अपनाया जाता है। योजना, विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुमानित ब्लॉक-वार / गतिविधि-वार संभावितों की पहचान के साथ शुरू होती है।

बी) संभावनाबद्ध वित्त योजना (पीएलपी) :

पीएलपी विकेंद्रीकृत वित्त योजना की दिशा में एक कदम है, जिसका मूल उद्देश्य बैंक वित्त के माध्यम से विकास की मौजूदा क्षमता का मानचित्रण करना है। पीएलपी लंबी अवधि की भौतिक क्षमता, बुनियादी ढांचे के समर्थन की उपलब्धता, विपणन सुविधाओं और सरकार की नीतियों/कार्यक्रमों आदि को ध्यान में रखते हैं। नाबार्ड, यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय करता है कि पीएलपी अधिक केंद्रित और कार्यान्वयन योग्य हो ताकि बैंक उनका अधिक उपयोग कर सकें। शाखा ऋण योजना तैयार करते समय लाभप्रद रूप से पीएलपी को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने पर जोर देना चाहिए।

पीएलपी तैयार करते समय, अग्रलिखित प्रक्रियाओं और परियोजनाओं की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए जैसे - क) कार्बन उत्सर्जन को कम करना; बी) उर्वरकों के अति प्रयोग को रोकना; ग) पानी का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना; और डी) कृषि प्रदूषण के मुद्दे।

योजनाओं को जैविक खेती, बायोडायनामिक खेती, पर्माकल्चर और टिकाऊ लघु-स्तरीय खेती जैसी नवीन कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और किसानों के बाजारों को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस तरह की पहल को उचित निवेश और परियोजना वित्त ढांचे द्वारा समर्थित होना चाहिए।

डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र का विस्तार करना :

डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र के विस्तार और गहनता की दृष्टि से, एसएलबीसी को बैंकों और हितधारकों के परामर्श से पायलट आधार पर अपने संबंधित राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में एक



ज़िले की पहचान करने और एक महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले बैंक को आर्बंटित करने की सलाह दी गई थी, जो प्रयास करेगा कि एक वर्ष के भीतर ज़िले को 100 प्रतिशत डिजिटल रूप से सक्षम बनाया जा सके, ताकि ज़िले के प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित, त्वरित, किफायती और सुविधाजनक तरीके से डिजिटल भुगतान करने / प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सके।

लीड बैंक योजना के विभिन्न माध्यम / गतिविधियां :

अग्रणी बैंक योजना के माध्यम से सतत विकास और ग्रामीण उधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए समावेशी विकास के लिए विभिन्न चैनल/गतिविधियां निम्नानुसार हैं:

कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) मॉडल :

बीसी मॉडल बैंकिंग सुविधाओं के विस्तार का एक स्थायी तरीका प्रदान कर सकता है जहां एक शाखा व्यवहार्य नहीं पाई जाती। बीसी द्वारा मूल बचत बैंक जमा खाता (बीएसबीडीए) खाते खोलने के लिए कई आईटी आधारित समाधानों का उपयोग किया जा रहा है।

राज्य सरकारों की भूमिका :

उनकी भूमिका अनुकूल कानून और व्यवस्था की स्थिति, जलापूर्ति और सिंचाई सुविधाओं, सड़क और डिजिटल कनेक्टिविटी, उचित भूमि रिकॉर्ड विकसित करने, पहचान प्रक्रिया में सहायता करने, प्रचार अभियान, वसूली आदि को सुनिश्चित करने में है।

आरसेटी :

आरसेटी का प्रबंधन बैंकों द्वारा भारत सरकार और राज्य सरकार के सक्रिय सहयोग से किया जाता है। बेरोज़गारी की समस्या

को कम करने के लिए ग्रामीण गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले युवाओं के आवश्यक कौशल प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन को सुनिश्चित करने के लिए यह समर्पित संस्थान है। राज्य के प्रत्येक ज़िले में एक आरएसईटीआई स्थापित है। संबंधित बैंक ज़िले में अग्रणी बैंक है जो इसे बनाने और प्रबंधित करने की ज़िम्मेदारी उठाता है।

एसएचजी और एमएफआई की पहुंच का विस्तार :

नाबार्ड महत्वपूर्ण रूप से बहिष्कृत ज़िलों में एसएचजी के गठन को सुविधाजनक बनाने की क्षमता का आकलन कर सकता है और निकटतम शाखा से लिंकेज के साथ एसएचजी के गठन की योजना की सिफारिश कर सकता है। वित्तीय सहायता के लिए बैंकों द्वारा विचार किए जा सकने वाले क्षेत्र में कार्यरत एमएफआई की मैपिंग के लिए नाबार्ड और सिडबी द्वारा एक समान मूल्यांकन किया जा सकता है।

क्षमता निर्माण/सुग्राहीकरण कार्यक्रम :

कर्मचारियों के संवेदीकरण/प्रशिक्षण/सेमिनार आदि की समय-समय पर निरंतर आधार पर आवश्यकता होती है। भारतीय रिज़र्व बैंक(आरबीआई) और नाबार्ड के राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण महाविद्यालयों के साथ-साथ राष्ट्रीय बैंक प्रबंधन संस्थान (एनआईबीएम), भारतीय व्यवसाय प्रबंधन संस्थान (आईआईबीएम), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (एनआईआरडी), आदि के साथ अलग-अलग बैंकों के प्रशिक्षण संस्थान उपयुक्त मॉड्यूल का विकास कर रहे हैं।

एसएचजी बैंक लिंकेज कार्यक्रम:

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में गरीबों को संगठित करने और सामाजिक विकास के मुद्दों का समाधान करने की क्षमता है। गरीब महिलाओं के संगठन का सशक्तिकरण करने की आवश्यकता है। स्वयं सहायता समूह - बैंक लिंकेज कार्यक्रम (एसएचजी-बीएलपी) अगम्य ग्रामीण गरीबों को औपचारिक बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए एक वैकल्पिक तंत्र है। एसएचजी-बीएलपी गरीबों को उनकी आकस्मिक ऋण ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सूक्ष्म ऋण का प्रावधान करता है ताकि उन्हें गरीबी से निपटने के लिए आजीविका लेने में सक्षम बनाया जा सके।

संयुक्त देयता समूह (जेएलजी):

जेएलजी मोड के माध्यम से ग्रामीण गरीबों के वित्तपोषण की योजना छोटे/सीमांत/किरायेदार किसानों, मौखिक पट्टेदारों, बंटाईदारों आदि को ऋण प्रदान करने के लिए बैंकों के पास उपलब्ध एक अन्य उपकरण है। एक समूह दृष्टिकोण के माध्यम से किसान, एक समूह दृष्टिकोण अपनाते हैं और सहकर्मी शिक्षा और ऋण अनुशासन की सुविधा प्रदान करते हैं।

सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं के मामले में:

बैंकों को लाभार्थियों के चयन में खुद को सक्रिय रूप से शामिल करना चाहिए और बेहतर वसूली सुनिश्चित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि सब्सिडी का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है और साथ ही उसकी बैंकेबिलिटी और व्यवहार्यता पर ध्यान देना चाहिए।

सार-संक्षेप :

यह योजना शाखा विस्तार में सुधार, जमा संग्रहण और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण देने के अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में उपयोगी रही है, खासकर ग्रामीण/अर्ध-शहरी क्षेत्रों में। अग्रणी बैंक योजना को हमारे समाज में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में पाए जाने वाले वित्त अंतराल को पहचानने और पूर्ति करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विकसित और कार्यान्वित सबसे बड़ा नवाचार कहा जाता है।

अग्रणी बैंक योजना के माध्यम से सतत विकास और ग्रामीण ऋण पर ध्यान केंद्रित करते हुए समावेशी विकास के लिए विभिन्न चैनल/गतिविधियां उपलब्ध हैं। इसके अलावा, अग्रणी बैंक योजना, ग्रामीण लोगों के लिए उनकी ऋण आवश्यकताओं को पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से प्राप्त करने के लिए एक रोडमैप के रूप में भी कार्य करती है। एसएलबीसी संयोजक बैंकों को उन सभी केंद्रों पर बैंकिंग विस्तार सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकारों के साथ, सड़क/डिजिटल कनेक्टिविटी, अनुकूल कानून और व्यवस्था की स्थिति, निर्बाध बिजली आपूर्ति, पर्याप्त सुरक्षा, आदि जैसे मुद्दों को उठाना चाहिए, जहां औपचारिक बैंकिंग प्रणाली द्वारा प्रवेश आवश्यक है।



ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता : श्रृंखला

आलेख

ज्ञा नपीठ पुरस्कार विजेता' श्रृंखला की इस तृतीय कड़ी में हम, भारत में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किए जाने वाले बंगाल के प्रथम उपन्यासकार श्री ताराशंकर बंधोपाध्याय की संक्षिप्त जीवनी का यहां परिचय दे रहे हैं।

श्री ताराशंकर बंधोपाध्याय (1898-1971), बंगाली भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। उन्हें 'गणदेवता' नामक अपने उपन्यास के लिए वर्ष 1966 में भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में 65 उपन्यास, 53-कहानी-पुस्तकें, 12 नाटक, 4 निबंध-पुस्तकें, 4 आत्मकथा, 2 यात्रा वृत्तांत लिखीं और कई गीतों की रचना की। ताराशंकर बंधोपाध्याय को अपने जीवनकाल में 1966 में प्रतिष्ठित 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' के अलावा, 1955 में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 'रबीन्द्र पुरस्कार', 1956 में इनके द्वारा रचित उपन्यास 'आरोग्य निकेतन' के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 1962 में 'पद्म भूषण' और 1969 में 'पद्म विभूषण' और 'शरत स्मृति पुरस्कार' जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :

बंधोपाध्याय का जन्म उनके पैतृक घर बीरभूम ज़िले के लाभपुर गाँव, बंगाल प्रांत, ब्रिटिश भारत (अब पश्चिम बंगाल,



ताराशंकर बंधोपाध्याय
(23 जुलाई 1898 - 14 सितंबर 1971)

भारत) में हरिदास बंधोपाध्याय और प्रभाती देवी के यहाँ हुआ था। उन्होंने 1916 में लाभपुर जादबलाल एच.ई. स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और बाद में पहले संत जेवियर्स कॉलेज, कोलकाता और फिर दक्षिण उपनगरीय कॉलेज (अब आशुतोष कॉलेज) में भर्ती हुए। संत जेवियर्स कॉलेज में इंटरमीडिएट की पढ़ाई के दौरान वे असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। खराब स्वास्थ्य और राजनीतिक सक्रियता के कारण वह अपने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को पूरा नहीं कर सके। बाद में उन्होंने खुद को साहित्य के



बीरभूम के लाभपुर में ताराशंकर बंधोपाध्याय का
250 साल पुराना पैतृक घर 'धात्रिदेवता'



बीरभूम के लाभपुर में
ताराशंकर बंधोपाध्याय का घर

लिए समर्पित करने का फैसला किया। वर्ष 1932 में, वे पहली बार शांतिनिकेतन में रवींद्रनाथ टैगोर से मिले। उनका पहला उपन्यास 'चैताली घुरनी' उसी वर्ष प्रकाशित हुआ। ताराशंकर बंद्योपाध्याय का विवाह 1916 में उमाशशि देवी से हुआ। उनके दो बेटे और तीन बेटियां थीं। उनका निधन अपने गृह राज्य पश्चिम बंगाल (कोलकाता) में हुआ।

उनके साहित्य की विशेषता यह भी थी कि उन्हें प्रादेशिक जीवन को व्यापक रूप से चित्रित करने में महारत हासिल थी। इस कार्य में उन्हें अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई और उनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण भी यही था। यहां यह उल्लेखनीय बात है कि उनकी कहानी 'जलसाघर' पर सत्यजित रे ने फिल्म भी बनाई थी।

उल्लेखनीय कार्य और उपलब्धियां :

1952 में, उन्हें विधान सभा के सदस्य के रूप में नामित किया गया। वे 1952-60 के बीच पश्चिम बंगाल विधान परिषद के सदस्य थे। 1954 में, उन्होंने अपनी मां से दीक्षा ली। 1957 में वे एफ्रो-एशियन राइटर्स एसोसिएशन की तैयारी समिति में शामिल होने के लिए सोवियत संघ गए और बाद में चीनी सरकार के निमंत्रण पर ताशकंद में आयोजित एफ्रो-एशियन राइटर्स एसोसिएशन की बैठक

में उन्होंने भारतीय लेखक प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में प्रतिनिधित्व किया।

वर्ष 1959 में, उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से 'जगत्तारिणी स्वर्ण पदक' प्राप्त किया और मद्रास में अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1960 में, वे पश्चिम बंगाल विधानसभा से सेवानिवृत्त हुए, लेकिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें संसद के लिए नामित किया गया। 1960-66 के बीच वे राज्य सभा के सदस्य रहे। 1963 में, उन्हें 'शिशिरकुमार पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 1966 में, वह संसद से सेवानिवृत्त हुए और नागपुर बंगाली साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की। कोलकाता विश्वविद्यालय और जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की उपाधि से सम्मानित किया गया। 1969 में, उन्हें 'साहित्य अकादमी' की फेलोशिप दी गई। 1970 में वे बंगीय साहित्य परिषद के अध्यक्ष बने।

उन्होंने बड़ी संख्या में उपन्यास और लघु कथाएं लिखीं। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में कहानी-संग्रह, कविताएं, नाटक, लघु कहानी-संग्रह, प्रहसन, संस्मरण, निबंध संग्रह, यात्रावृत्तांत, बिम्बचित्रण, आदि शामिल हैं।



ईश्वर की उपस्थिति

एक आदमी रात के समय झोपड़ी में बैठकर एक छोटे से दीए को जलाकर कोई किताब पढ़ रहा था। आधी रात बीत गई। जब वह थक गया तो फूंक मारकर उसने दीया बुझा दिया। लेकिन वह यह देखकर हैरान रह गया कि जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चांद बाहर ही बना रहा और उसकी किरणें फैल नहीं पा रही थीं। लेकिन जैसे ही दीया बुझ गया तो चांद की किरणें उस कमरे में फैल गईं। वह आदमी समझ नहीं पाया कि एक छोटे से दीए ने इतने बड़े चांद को बाहर कैसे रोक कर रखा। इसी तरह हमने भी अपने जीवन में अहंकार रूपी छोटे-छोटे दीए जला रखे हैं, जिसके कारण परमात्मा रूपी चांद बाहर ही खड़ा रह जाता है। जब तक व्यक्ति वाणी को विश्राम नहीं देंगे तब तक मन शांत नहीं होगा। मन शांत होगा तभी ईश्वर की उपस्थिति महसूस होगी।

वित्तीय प्रबंधन

आलेख

प्रत्येक व्यावसायिक क्रिया का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंध वित्त से होता है। उत्पादन, विपणन, क्रय आदि क्रिया में वित्तीय पहलू का समावेश होता है। वित्त की समस्या का घनिष्ठ संबंध क्रय, उत्पादन और विपणन से होता है। इस प्रकार सभी विभागों के कार्यकलापों में वित्त की समस्या किसी न किसी रूप में होती है।

वित्तीय प्रबंधन उन समस्त गतिविधियों का समावेश करता है जो भावी निधि प्रवाह की मात्रा एवं समय संबंधी निर्णय को प्रभावित करती है। वित्त, उत्पादन और विपणन के बीच वही कार्य करता है जो मशीन को चलाने में तेल का होता है। उत्पादन और विपणन संबंधी निर्णय में कुछ ऐसे भी पहलू होते हैं जो वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में नहीं आते, यद्यपि वे वित्त को प्रभावित करते हैं।

उत्पादन की दशा में परिवर्तन या व्यवसाय के प्रबन्ध में कर्मचारियों की सहभागिता या विपणन और विज्ञापन तकनीकी में परिवर्तन आदि ऐसी समस्याएँ हैं जिन्हें मूलतः उत्पादक प्रबंधन, कर्मचारी प्रबंधन, विपणन प्रबंधन के क्षेत्र में ही शामिल की जाएगी। वित्तीय प्रबंधन की आधुनिक विचारधारा के आधार पर वित्तीय प्रबंधक उपक्रम के सर्वोत्तम प्रबंध को निर्णय लेने में सहायता पहुँचाता है। दूसरे अर्थों में, सर्वोच्च प्रबंधन की सफलता के लिए वित्तीय प्रबंधन को महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त होती है।

किसी भी उपक्रम में वित्तीय प्रबंधक अन्य विभागों के सहयोग तथा समन्वय के बगैर सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। अतः आधुनिक युग में वित्तीय प्रबंधक उपक्रम के सभी कार्यों से समन्वय स्थापित कराता है। व्यावसायिक प्रबंधन के समस्त क्षेत्रों में वित्तीय प्रबंधन ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी प्रकृति मूलतः केन्द्रीयकृत है। आधुनिक औद्योगिक उपक्रम में विपणन में उत्पादन कार्यों का विकेन्द्रीकरण तो सम्भव है किन्तु वित्त कार्य का विकेन्द्रीकरण व्यावहारिक दृष्टि से वांछनीय नहीं होता है, क्योंकि वित्तीय समन्वय एवं नियन्त्रण की स्थिति केन्द्रीयकरण के द्वारा ही स्थापित की जा सकती है। इस स्थिति को स्थापित किये बिना व्यवसाय के उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव नहीं होगी।

वित्तीय निर्णय आय की मात्रा तथा व्यावसायिक जोखिम इन दोनों को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में, नीति विषयक, निर्णय



आकांक्षा मिट्टल
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, दिल्ली

जोखिम एवं लाभदायकता पर प्रभाव डालते हैं तथा ये दोनों कारक सम्मिलित रूप में फर्म के मूल्य को निर्धारित करते हैं। अतः वित्तीय परिणामों के आधार पर ही व्यवसाय की कार्य-निष्पत्ति का मूल्यांकन किया जाता है।

वित्तीय प्रबंधक की आधुनिक विचारधारा विश्लेषणात्मक एवं अधिक व्यापक है। इसके अन्तर्गत आन्तरिक एवं बाह्य परिस्थितियाँ सभी को ध्यान में रखते हुए श्रेष्ठ वित्तीय प्रबंध पर बल दिया जाता है।

परम्परागत रूप से व्यवसाय में वित्तीय प्रबंधन यान्त्रिक कार्य था, जबकि आधुनिक रूप में वित्तीय प्रबंधन का कार्य एक सतत् प्रशासनिक प्रक्रिया है क्योंकि व्यवसाय के सफल संचालन के लिए कोषों के लाभपूर्ण एवं सम्यक् उपयोग का दायित्व भी अब इस क्षेत्र की परिधि में आता है, फलस्वरूप वित्तीय प्रबंधक के महत्व को प्रत्येक व्यावसायिक संगठन में मान्यता दी जाने लगी है।

आधुनिक व्यावसायिक प्रबंधन में वित्तीय प्रबंधक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यवसाय की सभी गतिविधियों में वित्तीय प्रबंधक व्यवसाय निर्णयों में आधारभूत भूमिका निभाता है। फलस्वरूप, वित्तीय प्रबंधन व्यावसायिक प्रबंध का एक अभिन्न अंग बन गया है।

उन्नत कृषि के लिये कृषि क्षेत्र में भी वित्तीय प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि आज कृषकों को अच्छे बीज, रसायन खादों और कृषि यन्त्रों के सन्दर्भ में चुनाव हेतु वित्तीय परामर्श ज़रूरी होता है।

हामीदारों, विनियोग बैंकों एवं प्रन्यास कम्पनियों के व्यवस्थापकों के लिए प्रस्तुत विषय का व्यापक ज्ञान अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, व्यापारिक बैंकों एवं अन्य सभी प्रकार की वित्तीय संस्थाओं के प्रबन्धकों को भी विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। यही कारण है कि प्रायः इस प्रकार की संस्थाएँ अपने लिए ऐसे वित्तीय विशेषज्ञों की सेवाएँ प्राप्त करती हैं जो वित्तीय प्रबन्ध के प्रत्येक पहलू से पूर्ण परिचित होते हैं।

देश के अनेक विनियोक्ता अपनी संचित पूंजी का विनियोग इन कम्पनियों की प्रतिभूतियों में करते हैं। विनियोक्ताओं में धनी एवं साधारण सभी वर्गों के व्यक्ति होते हैं। उनका मार्गदर्शन करने के लिए देश में विनियोग बैंक का अभाव रहा है तथा उन्हें विनियोग के लिए 'सेक्यूरिटी डीलर' तथा 'वित्तीय दलालों' पर निर्भर रहना होता है।

उन सबसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वे स्वयं निर्णय कर सकें कि किस कम्पनी का चुनाव किया जाये अथवा किन प्रतिभूतियों में धन लगाया जाये? किन्तु जिन विनियोक्ताओं को वित्तीय प्रबंधन के सिद्धान्तों का ज्ञान होता है, वे स्वयं में उचित निर्णय करने की स्थिति में हो जाते हैं। ऐसे विनियोक्ता भी स्थायी रूप से अंशधारी न बनकर केवल परिकल्पों के रूप में ही विनियोग करते हैं।

कम्पनी का स्वामित्व अंशधारियों में निहित होता है। संख्या अधिक होने के कारण वे प्रबंधन में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेते और प्रबन्ध का भार निर्वाचित संचालक-मंडल को सौंप देते हैं। संचालक मंडल हितधारक के हित में इस कर्तव्य का किस सीमा तक और किस प्रकार



पालन करते हैं, यह देखना हितधारकों का कार्य है। यदि हितधारक वित्तीय प्रबंधन के सिद्धान्तों से अवगत हैं तो कम्पनी की साधारण सभा में कम्पनी की वित्तीय दशा का उचित मूल्यांकन कर सकेंगे।

प्रबन्धक जनता द्वारा विनियोजित धन के प्रन्यासी होते हैं और निगमों में जनता के विभिन्न वर्गों की पूंजी का विनियोग किया जाता है, जिसकी सुरक्षा का भार प्रबन्धकों पर ही होता है। प्रबन्धकों को यह भी ध्यान रखना होता है कि विनियोजित पूंजी की मात्रा पर नियमित रूप में उचित लाभ प्राप्त होता रहे, ताकि सदस्यों को विनियोजित पूंजी एवं जोखिम के लिए समुचित लाभांश दिया जा सके।

आज औद्योगिक उपक्रमों में श्रम संघों का महत्व बढ़ा है। कर्मचारी संघ के नेताओं में वित्त की प्रवीणता हासिल करने पर वे कर्मचारियों को मजदूरी, बोनस, भत्ते व अन्य सुविधा को बढ़ाने के लिये कारगर ढंग से मांगों को रख सकते हैं।



“जीवन में अक्सर असफल वे लोग होते हैं,
 जिन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि जब उन्होंने हार मान ली थी,
 तब वे सफलता के कितने करीब थे।”

– थॉमस एल्वा एडीसन

कुछ कमी सी है!

आलेख

हो सकता है हमारे प्रयासों में कुछ कमी है।
यूं ही नहीं फिज़ाओं में नमी सी है।
इंसान चाहता है रहना दूर इंसान से।
क्या एक जीव ने बरसाई इतनी बेबसी है।।

प्यार मोहब्बत भाईचारा।
ये सब बातें कहने की हैं।
जब ज़रूरत है किसी को अपने की।
तो कितनी बातें अनकही सी हैं।।

डर रहा है हर कोई।
छूने भर से दूर हुआ।
गले लगाना नहीं थी हमारी संस्कृति।
मगर अब तो पास ना आने को भी मजबूर हुआ।।

लड़ लेते थे बड़े-बड़े रोगों से भी।
फिर भी आज हम घुटने टेके हैं।
क्या किया है ऐसा आज इंसान ने।
अपनी ऊंचाईयों से भी मुंह फेरा है।।

कहर इस कदर बरपाया है।
क्यों हमने इतना प्रलय मचाया है।
हम तो जीव मात्र के कल्याण का ही सोचा करते थे।
क्यों हमने अपनी संस्कृति को भुलाया है।।



मोनालिसा पंवार
एकल खिड़की परिचालक
जोधपुर पाल रोड
एलआईसी सीए शाखा
जोधपुर

हम तो जान देके भी जीवों का सोचा करते थे।
हर जीव में है जान, पेड़ों को भी पूजा करते थे।
पिछड़कर हम अपने आप से।
किन अंधियारी गलियों में खो गए।।
ज़रा गौर करें हम क्या से क्या हो गए हैं।।

काश हम लौट आए।
अपनी भूली संस्कृति को पहचान जाए।
पा ले वो मुकाम फिर से।
और विश्व गुरु फिर से कहलाए।।



“बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं,
लेकिन बाज़ बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से जनित समस्या को ही खत्म कर देता है। समस्याएं
समान होती हैं, लेकिन आपकी प्रवृत्ति इनमें अंतर पैदा करती हैं।”

– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हिंदी ई-टूल का प्रयोग

एंड्रॉइड (Android based) मोबाइल तथा टैबलेट में हिंदी स्वयं शिक्षण – लीला-प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठ्यक्रम

- प्ले स्टोर(Play Store) में जाकर (lila-rajbhasha) तथा (lila pravah)डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
- यह पैकेज विशेष रूप से सरकारी एवं अर्ध-सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, निगमों और बैंकों के उन कर्मचारियों के लिए लाभप्रद है, जो हिंदी में सभी कार्यालयीन क्रियाकलापों को संपादित करने के लिए क्षमता अर्जित करना चाहते हैं।
- लीला (LILA - Learn Indian Languages through Artificial Intelligence) स्वयं शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। लीला हिंदी स्वयं शिक्षण पैकेज के पाठ्यक्रम कई भाषाओं (अंग्रेज़ी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बंगला, असमी, उड़िया, मणिपुरी, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, नेपाली तथा बोडो) के माध्यम से हिंदी सीखने के लिए हैं।
- लीला हिंदी प्रबोध का लक्ष्य हिंदी के मूल ज्ञान को प्रदान करना है और प्रथम स्तर के पाठ्यक्रम है।
- लीला हिंदी प्रवीण कक्षा आठ स्तरीय हिंदी पाठ्यक्रम है, जो विशेष रूप से सरकारी और कॉर्पोरेट कर्मचारियों के लिए तैयार किया गया है। यह लीला हिंदी प्रबोध पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद उन्नत हिंदी सीखने के लिए भी उपयोगी है।
- लीला हिंदी प्राज्ञ कक्षा दस स्तरीय हिंदी पाठ्यक्रम है जो विशेष रूप से हिंदी में, प्रारूपण, आधिकारिक पत्राचार, नोटिंग, आदेश, ज्ञापन, परिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति आदि सीखने के लिए है।

साभार : राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान
 एनआईसी-राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
 भारत सरकार

इंसानियत ही व्यक्ति की असली पहचान है

एक महिला किसी बड़ी कंपनी में नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जा रही थी। उसे पूरा भरोसा था कि उसे नौकरी मिल जाएगी। वह इंटरव्यू के लिए बुलाए जाने के लिए रिसेप्शन पर लाइन में इंतज़ार कर रही थी। जब वह प्रतीक्षा कर रही थी, तो एक युवक उसके पास आया और पूछा, “क्या समय हो गया है?” ऐसा लग रहा था कि वह आदमी थका हुआ है। सादे कपड़े पहने होने के कारण वह गरीब लग रहा था। महिला ने उदास चेहरे के साथ उत्तर दिया, “सुबह 11 बजे है।” आदमी ने औरत से पूछा – “क्या आपके पास पानी है? मुझे सचमुच प्यास लगी है।” महिला ने उत्तर दिया – “नहीं”। उस आदमी की उपस्थिति से वह नाराज़ थी। आदमी ने महिला से विनम्रतापूर्वक पूछा – “मुझे तत्काल किसी से संपर्क करना है, मैं अपना मोबाइल ढूँढ नहीं पा रहा हूँ, क्या मैं आपके मोबाइल से एक कॉल कर सकता हूँ?” महिला ने जवाब में कहा – “मैं जानती हूँ कि मेरा फोन नंबर प्राप्त करने के लिए आपकी एक सोची-समझी चाल है।” पुरुष ने एक क्षण के लिए महिला की ओर ध्यान से देखा। उसने कुछ नहीं कहा और अगली सीट पर बैठ गया। बस वह महिला तिरस्कार की भावना से उस पुरुष को घूरती रही। उसने मन ही मन सोचा – वह इस कार्यालय में शायद एक क्लर्क या क्लीनर होगा। उसने अपने बैग से एक बोतल भी निकाली और थोड़ा पानी पिया। जाहिर सी बात है कि उसके पास पानी था। लेकिन वह इसे उस आदमी के साथ साझा नहीं करना चाहती थी।

जल्द ही महिला को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। 4 पुरुषों ने प्रारंभिक साक्षात्कार लिया। उसने पहला इंटरव्यू आसानी से पास कर लिया। अब बारी थी उसके फाइनल इंटरव्यू की। कंपनी के सीईओ फाइनल राउंड में उस महिला का इंटरव्यू लेना चाहते थे। सीईओ के निजी सचिव उस महिला को सीईओ के केबिन तक ले गया। जैसे ही उसने दरवाजा खोला... कैबिन के अंदर प्रवेश करते ही वह चौंक गई। यह वही आदमी था जिससे वह स्वागत कक्ष में मिली थी। वह उसी कंपनी के सीईओ थे जहां उस महिला ने नौकरी के लिए आवेदन किया था। महिला ने पहले अपने उस दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। उस आदमी ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। लोग दूसरों को उसकी शक्ल से आंकते हैं। यह स्वाभाविक सी बात है कि लोगों का रंग-रूप भ्रामक हो सकता है। लेकिन इंसान का दिल झूठ नहीं बोल सकता। आप इस पद के लिए योग्य अवश्य हैं, लेकिन आपको नौकरी पर नहीं रखा जाएगा, क्योंकि मैं ऐसे लोगों को अपनी कंपनी में नौकरी पर रखना चाहता हूँ जो पहले एक इंसान के रूप में योग्य हों, उसके बाद ही नौकरी पर उन लोगों को रखना चाहूंगा जो उस पद के लिए योग्य हैं। अगले वर्ष जब साक्षात्कार के लिए बुलाया जाएगा तब आप अवश्य आ सकती हैं, किंतु एक बेहतर इंसान बनकर।” दरअसल एक अच्छे इंसान बनकर जीने में ही मानव जीवन के मूल्य निहित हैं।



दिनांक 25.06.2021 को पॉलीकॉम ऐप के माध्यम से केनरा बैंक द्वारा 'साइबर सुरक्षा के उपाय और जागरूकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय अंतरा-बैंक ऑनलाइन संगोष्ठी में श्री शंकर एस., महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग द्वारा उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए। इस अवसर पर श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मा सं विभाग भी उपस्थित है।



दिनांक 25.06.2021 को पॉलीकॉम ऐप के माध्यम से केनरा बैंक द्वारा 'साइबर सुरक्षा के उपाय और जागरूकता' विषय पर आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में श्री नगेन्द्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

केनरा बैंक Canara Bank

भारत सरकार का उपक्रम

A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

केनरा स्वर्ण ऋण से अपनी आवश्यकताओं को करें पूरा

केनरा
स्वर्ण
ऋण

@ ब्याज दर
7.35%
प्रतिवर्ष



आकस्मिक वित्तीय
आवश्यकताओं
के लिए उपयुक्त

त्वरित,
निर्बाध
ऋण



कम ब्याज दर



शर्ते लागू

@canarabank

YouTube CanaraBankOfficial

f canarabank

canarabankinsta

canarabankofficial

LinkedIn canarabank

कॉल केनरा 1800 425 0018

www.canarabank.com